पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

पौष-माघ, कलियुगाब्द 5119, जनवरी 2018

नई सरकार आकांक्षाएं

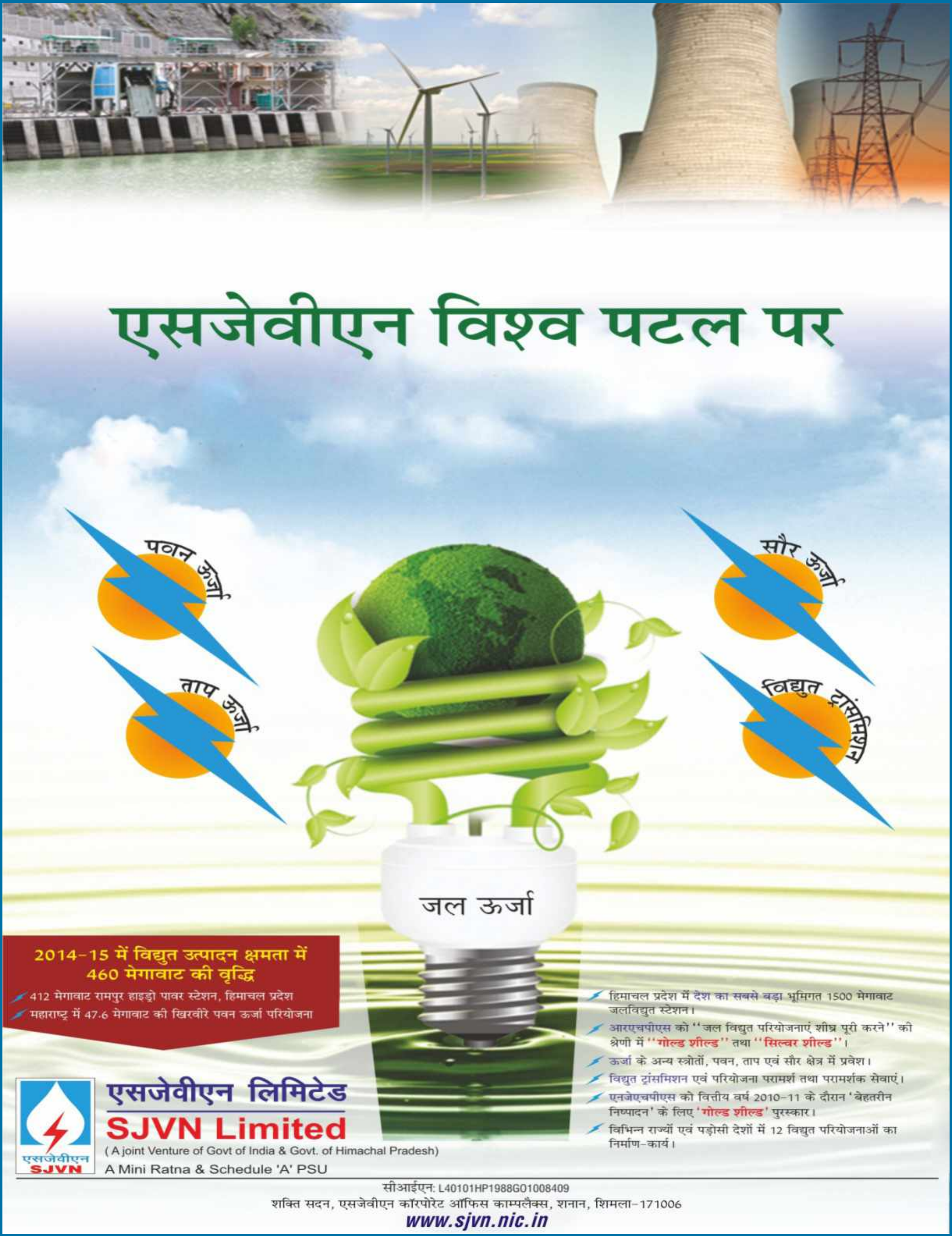
एसजेवीएन विश्व पटल पर
पवन ऊर्जा
ताप ऊर्जा
सौर ऊर्जा
विद्युत ट्रांसमिशन
जल ऊर्जा
2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि
412 मेगावाट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश
महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना
हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
आरएचपीएस को ''जल विद्युत परियोजनाएं शीघ्र पूरी करने'' की श्रेणी में ''गोल्ड शील्ड'' तथा ''सिल्वर शील्ड''।
ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए 'गोल्ड शील्ड' पुरस्कार।
विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 12 विद्युत परियोजनाओं का निर्माण-कार्य।
एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU
सीआईएन: L40101HP1988GO1008409
शक्ति सदन, एसजेवीएन कॉरपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला-171006
www.sjvn.nic.in

दयाहीनं निष्फलं स्यान्नास्ति धर्मस्तु तत्र हि ।
एते वेदा अवेदाः स्युर्दया यत्र न विद्यते ॥

अर्थात्: बिना दया के किये गए काम का कोई फल नहीं मिलता, ऐसे काम में धर्म नहीं होता। जहाँ दया नहीं होती वहां वेद भी अवेद बन जाते हैं।

वर्ष : 18 अंक : 1
मातृवन्दना
पौष-माघ, कलियुगाब्द
5119, जनवरी 2018

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा
सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा
सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा
पत्रिका प्रमुख
राजेन्द्र शर्मा
वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर
प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रेस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णतः अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

हिमाचल की जनता को नई सरकार से बड़ी उम्मीदें

हिमाचल प्रदेश व गुजरात की विधानसभा के चुनाव परिणामों के लम्बे अन्तराल के बाद उम्मीदवारों की अटकी हुई सांसो को राहत मिल गई है। चुनाव परिणाम अप्रत्याशित नहीं रहे। भाजपा दल जहां हिमाचल प्रदेश में 50 से अधिक सीटें जीतने का दावा कर रहीं थी, वहां तक भले ही न पहुंच पाई हो किन्तु 44 सीट प्राप्त कर उसने सम्मानजनक विजय प्राप्त की है। वहीं गुजरात में सत्ताविरोधी लहर के बावजूद भी भाजपा 99 सीटों पर विजयी हुई। विगत पांच वर्ष अर्थात् कांग्रेस के कार्यकाल में राज्य में कोई विशेष विकास कार्य नहीं हो पाए।

सम्पादकीय	हिमाचल की जनता को नई सरकार	3
प्रेरक प्रसंग	श्रम का पुरस्कार	4
चिंतन	जागेगा स्वाभिमान जमाना देखेगा	5
आवरण	नई सरकार : नई आकांक्षाएं	6
संगठनम्	स्वदेशी जागरण मंच की हिमाचल	10
देश प्रदेश	मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास के लिए	12
देवभूमि	हिमाचल के और 200 विद्यालयों	14
पुण्य जंयती	तपोदीप्त मुखमण्डल-स्वामी विवेकानंद	16
घूमती कलम	भ्रष्टाचार के चलते चीन ने लगाई	17
विविध	हरि बोल, हरि बोल, से हो रहा एक	19
दृष्टि	साल में 3 बार आम की फसल	20
काव्य जगत	शहीदी	21
कृषि	पहाड़ी हल्दी की गुणवत्ता	22
स्वास्थ्य	शीत ऋतु में स्वास्थ्य की रक्षा कैसे करें	23
युवापथ	शिलाई की प्रियंका नेगी का एशिया	24
महिला जगत	कोयला सोना बन सकता है	25
विश्वदर्शन	नासा ने बताया कि सूर्य से	26
समसामयिकी	अयोध्या का चुनावी परिप्रेक्ष्य	28
इतिहास	कहानी शिमला के रोथनी कैसल की	29
प्रतिक्रिया	क्या परमात्मा ऐसा भी हो सकता है	30
बाल जगत	एक ग्रह ऐसा भी जहां दिन में तीन	31

पाठकीय

सम्पादक महोदय,

भारत गांवों का देश है। देश की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग ग्रामीण भारत में रहता है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि ग्रामों का विकास हो। विकसित ग्रामों में ही विकसित भारत के दर्शन हो सकते हैं। जनप्रतिनिधि जमीनी स्तर पर ग्रामीण विकास की प्रक्रिया से जुड़े इस उद्देश्य को सामने रखकर ही प्रधानमंत्री द्वारा सांसद आदर्श ग्राम योजना की शुरुआत की थी। अनुभव में आया है कि अधिकांश संसद सदस्यों ने ग्रामों को गोद लेने में रुचि नहीं दिखाई। जिन्होंने ग्रामों को गोद लेकर विकास के कार्य प्रारंभ किए हैं उनका उत्साह भी कम होता देखा जा सकता है। राजनीतिक लाभ-हानि के आधार पर सियासी दल विकास का एजेंडा तय करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि विकास अधूरा रह जाता है। यह विचारणीय विषय है, जिस विकास के सपने दिखाकर राजनेता सत्ता में आते हैं वही उनके सपनों से कोसों दूर चला जाता है। आज जरूरत इस बात की है कि विकास प्रक्रिया का गैर राजनीतिकरण होना चाहिए। राजनीति को सेवा का माध्यम बनाना चाहिए और एक बार पुन: सांसद आदर्श ग्राम योजना की समीक्षा कर इसे नए सिरे से लागू किया जाना चाहिए। विकास योजनाओं और सुधारों की जमीनी हकीकतों को ध्यान में रखकर क्रियान्वित किया जाना चाहिए। ऐसा करने से वांछित परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है।❖ **जोगिन्द्र ठाकुर गाँव व डाकघर भल्यानी कुल्लू हि. प्र.**

महोदय,

भारत वर्ष विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सफलता का परचम लहरा कर दुनिया में न सिर्फ अपनी खास जगह बना चुका है, बल्कि इसकी विलक्षण शख्सियत से विश्व भी प्रभावित है। एक ओर जहां भारत ने बिना डगमगाए आगे बढ़ना सीखा है, तो वहीं इसकी शख्सियत का एक पहलू ऐसा भी है जिसने इसे हमेशा शर्मसार ही किया है। वह है अंधविश्वास। अंधविश्वास एक ऐसा दलदल है जिसमें हमारा समाज पूरी तरह डूबा है। पिछले दिनों महिला की चोटी कटने की विभिन्न घटनाएं हर दिन खबरों की सुर्खियां बनी रहीं। जिसके चलते लोग आत्मा, तंत्र-मंत्र, जादू टोना, काला जादू आदि के भ्रमों में और भी धंसते नज़र आ रहे हैं। यू.पी., दिल्ली और पंजाब के मालवा में हुई ऐसी घटनाओं ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। देश में और भी ऐसी अंधविश्वास से जुड़ी कई भावनाएं हैं जो लोगों से छुड़ाए नहीं छूट रही हैं जैसे वीरवार को सिर न धोना, सुचारू रूप से चल रहे शुभ कार्यों को तुरंत बंद कर देना, पीछे से अचानक आवाज़ आना, बिल्ली तथा कुत्तों द्वारा रास्ता काटना, घर के समक्ष व चौबारे पर कौवों का बोलना बार-बार ज़ारी रहना आदि ऐसे भ्रम हैं जो हर जगह भारत के हर कोने में आपको भली भान्ति मिल जाएंगे। बेशक हम कितने भी पढ़-लिख जाएं पर यह दकियानूसी बातें, रूढ़ीवादी सोच और भ्रम का पिटारा हमारी प्रगति में एक बड़े पत्थर समान है। जिसे पूरी तरह नष्ट होने पर ही हम प्रगति कर सकते हैं।

इस प्रकार की बातों पर लोगों द्वारा बहम करना तो वर्षों से ही देखने को मिल रहे हैं जिसमें बाल काटने के नए तरीके ने सोने पर सुहागे का कार्य किया है। आगे बढ़ने के लिए जहां कदमों का साथ जरूरी है तो वही शिक्षा का भी अपना अमूल्य योगदान है क्योंकि किताबें हमें वह रोशनी दिखाती हैं जो अनपढ़ता का अंधेरा लाखों दीपों संग भी नहीं दिख सकता है। इसलिए रूढ़ीवादी सोच को छोड़कर ज्ञान की नई दुनिया में अंधविश्वास के इन टोटकों को फांसी की सजा सुनाते हुए आगे बढ़ें, तब ही हमारा भारत वर्ष और भी आगे बढ़ सकता है।❖ **खुशी राम ठाकुर, लक्कड़ बाज़ार, बरोट**

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com
आप हमें व्हॉट्सएप, फेसबुक, टिव्टर व यू-ट्यूब पर भी संपर्क कर सकते हैं।

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को लोहड़ी, मकर संक्रांति, संत रविदास जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्मरणीय दिवस (जनवरी)

राष्ट्रीय युवा दिवस/विवेकानंद जयंती	12 जनवरी
लोहड़ी	13 जनवरी
मकर संक्रांति	14 जनवरी
थल सेना दिवस	15 जनवरी
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती	23 जनवरी
पूर्ण राज्यत्व दिवस	25 जनवरी
स्वतन्त्रता दिवस	26 जनवरी
संत रविदास जयंती	31 जनवरी

हिमाचल की जनता को नई सरकार से बड़ी उम्मीदें

हिमाचल प्रदेश व गुजरात की विधानसभा के चुनाव परिणामों के लम्बे अन्तराल के बाद उम्मीदवारों की अटकी हुई सांसो को राहत मिल गई है। चुनाव परिणाम अप्रत्याशित नहीं रहे। भाजपा दल जहां हिमाचल प्रदेश में 50 से अधिक सीटें जीतने का दावा कर रहीं थी, वहां तक भले ही न पहुंच पाई हो किन्तु 44 सीट प्राप्त कर उसने सम्मानजनक विजय प्राप्त की है। वहीं गुजरात में सत्ताविरोधी लहर के बावजूद भी भाजपा 99 सीटों पर विजयी हुई। विगत पांच वर्ष अर्थात् कांग्रेस के कार्यकाल में राज्य में कोई विशेष विकास कार्य नहीं हो पाए। पूर्व मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह का सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारियों के सहारे एक छत्रराज और कांग्रेस का परस्पर कलह ये दो बातें भी हार के मुख्य कारण रहे। कतिपय ऐसी घटनाएं भी शांति प्रिय प्रदेश में घटित हुईं जिनके कारण शासन एवं सुरक्षा व्यवस्था के प्रति जनसाधारण से विश्वास टूटता गया। चुनाव परिणामों में आश्चर्य चकित करने वाली कुछ घटनाएं भी उभर कर सामने आईं। भाजपा के घोषित भावी मुख्यमंत्री प्रो0 प्रेम कुमार धूमल और भाजपा के राज्याध्यक्ष सतपाल सती चुनाव हार गये। कांग्रेस दल के दिग्गज नेता व मंत्री, भाजपा के कुछ वरिष्ठ नेता भी चुनाव में मात खा गये, उन्हें आम जनता ने नकार दिया। यह चुनाव परिणाम सभी जन प्रतिनिधियों के लिए एक सबक बनकर उभरा है। राजनेताओं को अपना कद इतना ऊंचा भी नहीं बना लेना चाहिए या स्वयं को इतना बड़ा नहीं मान लेना चाहिए कि आम जनता उन तक पहुंच न पाए। प्रदेश की राजधानी में अपने चहेतों, व्यावसायियों, ठेकेदारों तथा उद्योगपतियों से घिरे रहने की बजाय अपने चुनाव क्षेत्र की देखभाल भी अवश्य कर लेनी चाहिए। अपने चुनाव क्षेत्र के दुर्गम इलाकों, अत्यन्त गरीब लोगों के लिए आवश्यक विकास योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु उनकी प्राथमिकता रहनी चाहिए। जनप्रतिनिधि वास्तव में वही हो सकता है जो जन-जन के प्रति उत्तरदायी हो।

भाजपा की जीत से यह भी परिलक्षित होता है कि प्रधानमंत्री मोदी के प्रति जनता का विश्वास बरकरार है। कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दलों ने नोटबन्दी, जी.एस.टी. तथा कई अन्य मुद्दों से मोदी को घेरना चाहा, किन्तु वे सफल न रहे। गुजरात में तो इन मुद्दों पर लोगों को भटकाने का काफी प्रयास किया गया। जाति और आरक्षण के बल पर वे विभाजन की नीति में काफी हद तक सफल भी हुए किन्तु अन्ततः वहां भी सच्चाई की जीत हुई। भले ही केन्द्र सरकार की कुछेक नीतियों में व्यवहारिक स्तर पर कुछ खामियां रह गई हों और सुपरिणाम दूरगामी हों किन्तु उनकी नियत पर भारत की आम जनता को कोई शक नहीं। उसी का परिणाम है कि भारत के 19 राज्यों में अब भाजपा सरकारें हैं।

हिमाचल की जनता को नई सरकार से बड़ी उम्मीदें और अपेक्षाएं हैं। समानरूप से प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र का विकास होना चाहिए। गांव की सड़कें पक्की होनी चाहिए। जहां अभी तक सड़कें नहीं पहुंची हैं वहां तक सड़कें बनाने के लिए बजट का प्रावधान हो। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार हो। नैतिक एवं बहु आयामी शिक्षा का प्रसार हो। रोजगारपरक शिक्षा पर भी ध्यान केन्द्रित किया जाए। बीते दिनों की घटनाओं से आम जनता स्वयं को असुरक्षित समझ रही है। सरकार का शीर्ष नेतृत्व प्रशासन, न्याय-व्यवस्था एवं पुलिस-बल में पारदर्शिता एवं सुदृढ़ता लाए। ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की दशा दयनीय है। किसानों के लिए बीज, खाद, कीटनाशक तथा कृषि उपकरण सस्ते दामों में उपलब्ध हों। मौसम की मार से बचाने के लिए सरकार द्वारा समुचित उपाय किये जाने चाहिए। साथ ही फसलों के विक्रय हेतु कोई ठोस नीति सरकार द्वारा बनाई जानी चाहिए। प्रदेश में सरकारी एवं गैर सरकारी कर्मचारियों के हितों के संरक्षण हेतु न्यायोचित नीतियों का निर्माण भी आवश्यक है। नई सरकार से हिमाचल की जनता को अपेक्षा अवश्य रहेगी कि विगत वर्षों से राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार पर अंकुश लगे और जनसामान्य के प्रति प्रशासन पारदर्शी एवं जबावदेह बने।

श्रम का पुरस्कार

एक बहरूपिये ने राजा भोज के दरबार में आकर राजा से पांच अणक (मुद्रा) की याचना की। राजा ने कहा कि वे कलाकार को पुरस्कार दे सकते हैं, दान नहीं। बहरूपिये ने स्वांग-प्रदर्शन के लिए तीन दिन की मोहलत मांगी। अगले दिन राजधानी के बाहर टीले पर एक जटा-जूटधारी तपस्वी समाधि-मुद्रा में शान्त बैठा दिखाई दिया। उत्सुकतावश चरवाहे वहां जुट गये। ''महाराज, आप कहां से पधारे?'' उनमें से एक ने प्रश्न किया किन्तु महाराज के कानों में ये शब्द गये नहीं, वे मौन ही रहे। न तो उसके नेत्र खुले और न उनका शरीर रंचमात्र हिला। ''बाबा, क्या कुछ भिक्षा ग्रहण करोगे?'' किन्तु इसका भी उन्हें उत्तर नहीं मिला। नगर लौटे चरवाहों से उस महान् तपस्वी का वर्णन सुन कर सभ्य नागरिकों, सेठों और दरबारियों की सवारियां नगर से बाहर की ओर दौड़ पड़ी। फल, फूल, मेवा-मिष्ठान के अम्बार लग गये किन्तु साधु ने आंखें न खोलीं। दूसरे दिन राजा भोज के मंत्री ने रत्नों की राशियां चरणों पर रखते हुए महात्मा से केवल एक बार नेत्र खोल कर कृतार्थ करने की प्रार्थना की किन्तु इसका भी उस साधु पर कोई असर नहीं हुआ। तीसरे दिन राजा भोज स्वयं वहां आ पहुंचे। लाखों अशर्फियां चरणों पर रख वे साधु से आशीर्वाद की प्रार्थना करते रहे किन्तु तपस्वी मौन ही थे। चौथे दिन बहरूपिये ने दरबार में उपस्थित हो अपने सफल स्वांग के लिए पांच अणक (मुद्राएं) पुरस्कार की मांग की।

''मूर्ख सारे राज्य का वैभव तेरे चरणों पर रखा था, तब तो तूने एक बार भी आंख खोल कर देखा नहीं और अब मात्र पांच अणक की याचना कर रहा है।'' राजा ने कहा।

''उस समय सारे वैभव तुच्छ थे, महाराज!'' बहरूपिये ने उत्तर दिया, ''तब मुझे वेश की लाज रखनी थी लेकिन अब पेट की आग अपने श्रम का पुरस्कार चाहती है।''❖

सेवा जीवन का लक्ष्य

एक दुर्घटना में एक व्यक्ति के परिवार के सभी सदस्य काल के गाल में समा गए। वह स्वयं अनेक दिनों तक चिकित्सकों की देखरेख में रहा। एक वृद्ध व्यक्ति ईश्वर की दया के रूप में उसे मिला। वृद्ध व्यक्ति को उसने अपना दुख खूब बढ़ा-चढ़ाकर सुनाया। वृद्ध सुनकर हंसने लगा। इस पर वह हक्का-बक्का-सा उसे देखने लगा। वृद्ध उसे अपनी कुटिया में ले आया और खाने को थोड़े-से भीगे चने दिए। उसने अंकुरित चना खाकर, लोटाभर जल पीने के बाद कुछ तृप्त होकर पूछा-'बाबा! मेरे दुख को सुनकर आप क्यों हंसे? 'हंसने की बात पर कौन नहीं हंसेगा?' समझाते हुए बूढ़े ने कहा- 'दुख में सुख का अनुभव जब करने लगोगे तब तुम भी हंसोगे?' कुछ कदम चलकर जब व्यक्ति ने मुड़कर देखा तो उसे अत्यंत आश्चर्य हुआ और उसकी आंखे खुली की खुली रह गईं। वृद्ध ने झोंपड़ी गिरा दी, दूर खड़ा ठहाका लगाकर हंस रहा था और कह रहा था कि अब कहीं और झोंपड़ी लगानी है, जहां सेवा चाहिए। फिर उसने देखा तेज कदमों से वृद्ध एक ओर चल पड़ा तथा आंखों से ओझल हो गया। संतुलित होने पर वह व्यक्ति अपने निवास की ओर चल पड़ा। भटके मन को जैसे राह मिल गई। वह सेवा कार्य में रमा तो वही उसके जीवन का लक्ष्य हो गया।❖

जागेगा स्वाभिमान जमाना देखेगा

-चेतन कौशल

प्राचीनकाल से ही हमारा देश अध्यात्म प्रिय देश रहा है। भारत के ऋषि-मुनियों का संपूर्ण जीवन ज्ञान अनुसंधान शिक्षण एवं प्रशिक्षण में व्यतीत हुआ है। सनातन संस्कृति में मानव जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास चार श्रेणियों में विभक्त किया था। वे सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ व्यक्तिगत ध्यानस्थ होकर ईश्वर से प्रार्थना करते हैं - ''हे प्रभु! तू मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चल, अंधेरे से उजाले की ओर ले चल। मृत्यु से अमरता की ओर ले चल।'' उनका मानना है कि ''आत्म सुधार करने से मानव जाति का सुधार होता है।'' जीवन सब जीते हैं। पर जीवन जीना इतना सरल नहीं, जितना कहना। वह हर पल कष्ट, दु:ख, कठिनाईयों और चुनौतियों से भरा रहता है।

मात्र विवेकशील मनुष्य समय और परिस्थिति अनुसार बुद्धि से निर्णय लेते हैं। वे भली प्रकार जानते हैं कि जीवन नश्वर है। सुख-दुख बादल समान हैं, आते हैं और चले जाते हैं। वह जीवन में जनहित, समाजहित और राष्ट्रहित में कुछ नया करना चाहते हैं, जबकि अन्य मार्ग में आने वाली कठिनाइयों से बचने के लिए सरल एवं लघु मार्ग ढूंढते हैं। इस प्रकार दोनों की सोच एक दूसरे से विपरीत हो जाती है। मानव जीवन में फूलों भरा सरल एवं लघु मार्ग ढूंढने वाले लोग मात्र मन की बात मानते हैं। वे उसी पर चलते हैं। वे नैतिकता और मानवता की तनिक भी परवाह नहीं करते हैं।

ऐसे लोगों द्वारा स्थापित पाठ्यक्रमों में देश का इतिहास, वास्तविक इतिहास नहीं होता है। उसमें सच्ची घटनाओं का सदैव अभाव रहता है। समाज परंपरागत सभ्यता एवं संस्कृति से कटता जाता है और धीरे-धीरे उसे भूल जाता है। वे सत्ता पाने के लिए नैतिकता और मानवता को भी ताक पर रख देते हैं। वे व्यक्ति विशेष, परिवार, वंश को महिमा मंडित करते कभी थकते नहीं हैं। वे क्षेत्रवाद, जातिवाद, धर्म-संप्रदाय वाद, को बढ़ावा देते हैं। इससे देश की एकता एवं अखण्डता कमजोर होती है। अपने हित के लिए समाज में दंगे करवाए जाते हैं, विवेकशील मनुष्य नैतिकता, मानवता और मान-मर्यादाओं को पसंद करते हैं। स्मरण रहे कि ऐसे ही लोगों के प्रयासों से भारत अखण्ड भारत ''सोने की चिड़िया'' था। वे निजी जीवन में जनहित, समाजहित और राष्ट्रहित में कष्ट, दु:ख, कठिनाईयों और चुनौतियों से सीधा सामना करने की विभिन्न प्रतिज्ञाएं करते हैं, वह विपरीत परिस्थितियों से लोहा लेने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। उनके लिए सबका हित सर्वोपरि होता है। उनके द्वारा संचालित विद्या केंद्रों में बच्चों को अच्छी, संस्कारित, गुणात्मक एवं उच्चस्तरीय शिक्षा मिलती है। उससे उनका चहुंमुखी विकास होता है। उनके प्रशासन की नीतियां सर्वकल्याणकारी होती हैं। उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि समस्त मानव जाति के पास जीवन यापन करने के सरल या कठिन मात्र दो ही मार्ग होते हैं। एक मार्ग उसे पतन-असत्य, अंधकार और दु:ख-मृत्यु की ओर ले जाता है तो दूसरा उत्थान- सत्य, प्रकाश और सुख-अमरता की ओर। हमें किस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए? उसे हमें जानना और समझना अति आवश्यक है। ❖

नई सरकार : नई आकांक्षाएं

-डॉ. उमेश कुमार पाठक

हिमाचल प्रदेश व गुजरात में भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिल चुका है। साथ-ही-साथ सरकार के मुखिया का चयन होने के उपरांत नई सरकार लोगों के समग्र विकास की महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए ठोस कदम उठाने में तनिक भी देर नहीं करेगी बल्कि कार्यों को परवान चढ़ाने के लिए कार्य करेगी। इस चुनावी परिणाम को राजनीतिक सत्ता विरोधी रूझान माना जाए अथवा मोदी लहर, यह बहस का विषय नहीं है। क्योंकि, अंततः हमारा लोकतंत्र जीता और आमजन के विश्वास की जीत हुई है। फिर भी एक बात तो मानी जा सकती है कि हिमाचली मतदाताओं ने परिवर्तन के पक्ष में मुहर लगाई है, अपनी उम्मीदों पर मुहर लगाई है, विकास का समर्थन किया है। इस संदर्भ में यहां यह ध्यान देना जरूरी है कि मतदाताओं की अपेक्षाएं, विकास संबंधी उनकी उम्मीदें, भ्रष्टाचार व आतंक से मुक्ति की चाह, सुशासन एवं बेरोजगारी की अंतहीन दशा आदि जैसे मुद्दों पर आमजन अपने राजनीतिक प्रतिनिधियों से दूरदृष्टि वाली नीतियों की अपेक्षा स्वभवतः रखती हैं। इतना ही नही, आज का सचेत व जागरूक मतदाता इस बात का भी आकांक्षी है कि हमसे झूठे वायदे न किए जाएं, स्वच्छ व इमानदार छवि वाले लोगों को नेतृत्व सौंपा जाए। सरकारी नीतियों में युवाओं व महिलाओं सहित जनभागीदारी बढ़े। विषय विशेषज्ञों को उनकी पहचान मिले। कहना गलत न होगा कि इक्कीसवीं सदी का आम नागरिक अमन-चैन की जिंदगी व्यतीत करने के निमित्त विधि एवं कानून का शासन चाहता है। अस्तु, नई सरकार और हिमाचली जनाकांक्षाओं के विभिन्न पहलुओं का संदर्भ और मायने भी ऐसे ही प्रतीत होते हैं।

दरअसल हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनावों के नतीजों के लिए हमें 40 दिनों की एक लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ी है। और, आखिरकार 18 दिसंबर 2017 को प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त हुई और वास्तविक लोकतंत्र की लहर में भारतीय जनता पार्टी विजयी हुई। निःसंदेह, भाजपा को 44 सीटें प्राप्त होने के कई मायने हैं। हालांकि, भाजपा के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार व शीर्ष नेता की हार आश्चर्य चकित करने वाली अवश्य मानी जा सकती है। लेकिन इसके बावजूद यह तो तय है कि हिमाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार गठित कर ली है। चुनावी जानकारों की नजर में वैसे तो सन् 1985 से राज्य के मतदाता प्रत्येक विधानसभा चुनावों में सरकारें बदलते आ रहे हैं और इस बार भी यह परंपरा कायम रही है। इस पूरे घटना चक्र में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमितशाह की टिप्पणी विशेष रूप से उल्लेखनीय और ध्यान देने योग्य है। उन्होंने इस चुनाव में मिली जीत का श्रेय आम नागरिक, पार्टी के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की मेहनत और सशक्त नेतृत्व एवं विकास को समर्पित किया है।

इस आलोक में सबसे पहले विधि एवं कानून को बनाए रखना किसी भी सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि राज्यों के अंदर रहने वाले विभिन्न लोगों में सरकार की नीतियों के प्रति विश्वास हो। साथ ही लोगों के समुचित विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि सरकारी नीति राजनीतिक सिद्धांतों और मूल्यों पर आधारित हो। हालांकि, विगत वर्षों में कुछ राजनेताओं ने मूल्यों पर आधारित राजनीति की बात कही है, परंतु आवश्यकता इसको अपनाने की है।

विकास का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू शिक्षा है। शिक्षा के अभाव में किसी भी प्रदेश का विकास संभव नही है। मूल्यपरक शिक्षा के साथ-साथ व्यवसायोन्मुखी शिक्षा

वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है। हिमाचल प्रदेश में शिक्षा की गुणवत्ता किसी से छिपी हुई नहीं है। विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम ऐसे होने चाहिए जिससे विद्यालयों में यह चेतना पैदा हो कि पहले वे एक सभ्य व उत्तरदायी नागरिक हैं। लेकिन, हिमाचल प्रदेश में उच्च शिक्षा का आज बड़ा बाजार विकसित हो चुका है। प्रदेश में कुल 17 निजी विश्वविद्यालय अपनी गहरी पैठ जमा चुके हैं। लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता आज भी चिंता का विषय बनी हुई है। ध्यातव्य है कि पिछली सरकार द्वारा कई सरकारी स्कूल व कॉलेज खोले तो गए हैं, लेकिन आधारभूत संरचनाओं के अभाव में शिक्षा की हालत पूरे प्रदेश की अत्यंत शोचनीय है।

सरकारी नीतियों के मूल्यांकन में आर्थिक पहलू भी एक निर्णायक घटक की हैसियत रखता है। आर्थिक विकास व संतुलित विकास अति आवश्यक है। एक रिपोर्ट के मुताबिक हिमाचल प्रदेश में लगभग दस लाख से अधिक युवा बेरोजगार हैं। इस संदर्भ में नई सरकार को अधिक-से अधिक युवाओं को स्वरोजगार के लिए अभिप्रेरित करने और उन्हें सर्वसुलभ आसान ऋण उपलब्ध कराने के लिए बैंकों के साथ एक सम्यक नीति का निर्माण करना होगा। क्योंकि, पिछली कांग्रेस सरकार की तरह केवल रोजगार मेले आयोजित करने मात्र से बेरोजगारी का निदान नहीं हो सकता। इसलिए नई सरकार द्वारा बेरोजगारी के समाधान के लिए स्वरोजगार की ठोस योजनाएं बनाकर तथा उन्हें धरातल पर उतारने के लिए इस दिशा में विशेष प्रोत्साहन कैंप आयोजित करने जैसे कदम उठाने की महती आवश्यकता है। क्योंकि, बेरोजगारी को दूर करके, आर्थिक विषमता को कम करके तथा आर्थिक लाभों को न्यायपूर्ण व विधिसम्मत ढंग से वितरित करके प्रांतीय विकास को बढ़ाया जा सकता है।

घरेलू उत्पाद में वृद्धि संबंधी नई सरकार की चुनौतियां भी कम नहीं हैं। वैसे तो कृषि उत्पादन और पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई है। लेकिन इन दोनों क्षेत्रों में अपार संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता है। नई सरकार इस क्षेत्र में भी प्रोत्साहन योजनाओं की सहायता से स्वरोजगार को बढ़ा सकती है।

अस्तु हिमाचल प्रादेशिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए प्रांत के सभी क्षेत्रों का योजनाबद्ध आर्थिक विकास किया जाना भी अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि, आज हमारा प्रदेश लगभग पचास हजार करोड़ के आस-पास के कर्ज में डूबा हुआ है और एक रिपोर्ट के मुताबिक प्राय: प्रति तीसरे माह ऋण का ब्याज चुकाने तथा सरकारी कर्मचारियों के वेतन भत्ते आदि देने के लिए ऋण की दरकार हो रही है। इतना ही नही, आज हर हिमाचली पर जन्म लेते ही लगभग 55 हजार का ऋण चढ़ जाता है। इसलिए पिछड़े हुए क्षेत्रों का विकास बड़ी तेजी से किया जाना चाहिए। इस दिशा में नई सरकार के लिए हिमाचल प्रांत को ऋण मुक्त करने के लिए दीर्घकालीन योजनाओं पर काम करते हुए अनावश्यक सरकारी व्ययों में भारी कटौती करनी होगी। क्योंकि, बहुत पहले ही कैग की एक रिपोर्ट में इस बात की चिन्ता व्यक्त की गई है कि यदि प्रदेश सरकार ने अपनी राजस्व प्राप्तियों में वृद्धि नहीं की तो आने वाले समय में प्रदेश बीमारू राज्यों की श्रेणी में शामिल हो जाएगा। इस दिशा में प्रदेश को कर्ज मुक्त करने के लिए केंद्रीय सहायता की आवश्यकता होगी। और नई सरकार को इसके लिए सतत और अथक प्रयास करने होंगे। इस कड़ी में दूसरे प्रान्तों के संसाधनों के बंटवारे का निपटारा करके अपने हिस्से की राशि की वसूली सुनिश्चित करने हेतु नई सरकार को अपेक्षाकृत प्रयास तेज करने होंगे।

पिछले पांच सालों में हिमाचल प्रदेश की कानून व्यवस्था चिंताजनक है। विगत पांच सालों में महिलाओं के प्रति अपराधों में लगभग 20 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई, नशे का कारोबार बढ़ा है। चारों ओर माफिया कारोबार बढ़ा है। हिमाचल जैसा शांत प्रांत अशांत और आतंकित हो चुका है।

अत: संतुलित विकास के लिए सरकार की नीतियों में आमूल-चूल परिवर्तन करना होगा। इस दिशा में नई सरकार को भेदभाव की नीति का पूरी तरह से त्याग करना होगा।

इसके अंतर्गत सरकार पर्यटन की दृष्टि से नए स्थानों को चिह्नित करके, उनका विकास तथा विशेष प्रोत्साहन योजना चलाकर पर्यटन को एक आधारभूत उद्योग के रूप में विकसित कर सकती है। और, इस दिशा में रेल तथा हवाई सेवाएं सीमित होने के कारण सड़कों के विकास और रखरखाव पर भी नई सरकार को अधिक बल देना होगा। इस आलोक में रेल लाइनों के विस्तार के साथ ही नए पर्यटन स्थलों को विकसित करने की आवश्यकता है। दरअसल पिछली सरकार की हिमाचल दर्शन के लिए हैलीकॉप्टर सेवा शुरू करने की योजना थी, लेकिन कई हैलीपैडों के निर्माण के बावजूद भी यह योजना कारगर नहीं हो सकी है। नई सरकार को इस दिशा में असरकारी उपाय करने होंगे तथा निजी-सार्वजनिक सहभागिता प्रणाली के आधार पर इसे क्रियान्वित करने होंगे।

अब बात पर्यावरण व स्वास्थ्य संबंधी विषयों की करते हैं। इस दिशा में पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी नीतियों में नई सरकार से पारदर्शिता को अपनाए जाने की अपेक्षा है। क्योंकि, स्वास्थ्य सेवाओं में आधारभूत संरचनाओं की कमी से हमारा पूरा प्रदेश बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। विकास के नाम पर पर्यावरण संरक्षण नई सरकार के समक्ष मुंह बाये खड़ा है। पर्यावरण को दूषित कर विकास की कल्पना हमारे लिए आत्मघाती होगी। अत: पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए विकास की राह खोजना नई सरकार के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण चुनौती होगी।

चूंकि, हिमाचल प्रदेश ने विकास की राह पर चलने की निष्ठा व्यक्त करते हुए अपनी मनपसंद सरकार को कमान पूरी तरह सौंप दी है, इसलिए इस विश्वास के साथ कि नई सरकार वह सब पूरा करेगी जो विकास के नए आयाम को छूने को आवश्यक होगा। और, अंत में हमारी ओर से नई सरकार को ढेर सारी बधाईयां और शुभकामनाएं। ❖ **लेखक सम्प्रति क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र धर्मशाला में अध्यापनरत हैं।**

हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था के समक्ष चुनौतियां

- पी.एल. वर्मा

18 दिसम्बर को आए चुनाव परिणामों के बाद प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है। प्रदेश में बढ़ते कर्ज से छुटकारा पाना व बढ़ते फिजूल खर्च पर अंकुश लगाना नई सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। हिमाचल प्रदेश की नवगठित भाजपा सरकार के लिए अगले पांच वर्ष चुनौतियों भरे रहने की पूरी संभावना है। आर्थिक विकास की रफ्तार को बढ़ाने के लिए तथा प्रदेश की निरंतर बिगड़ती अर्थव्यवस्था में सुधार लाना प्रदेश की भाजपा सरकार के लिए एक बड़ी चुनौती है। हिमाचल प्रदेश में हाल ही में सम्पन्न हुए विधान सभा चुनाव में जिस प्रकार भाजपा को जनादेश प्राप्त हुआ है उससे पिछली सरकार के कार्यो के प्रति जनता का असंतोष स्पष्ट है तो वहीं यह नई सरकार के प्रति जनता की अकांक्षाओं का भी परिचायक है। चुनावी साल होने के कारण पिछले एक वर्ष में जिस प्रकार कांग्रेस सरकार ने जन -लुभावन घोषणाएं की उनके प्रभावों से बचे रहना नामुमकिन है। सामाजिक कल्याण, कर्मचारी कल्याण अथवा आर्थिक विकास के नाम पर जिस प्रकार से सरकारी खज़ाने से खर्च किया गया उसका परिणाम पहले से घाटे तथा कर्ज में चल रहे प्रदेश के लिए ठीक रहने वाला नहीं है।

इसे पूर्व वित्त प्रबंधन की नाकामी ही कहेंगे कि वर्ष 2012-13 में जो सार्वजनिक ऋण 20,765 करोड़ था वह 2015-16 में बढ़ कर करीब 28 हज़ार करोड़ हो गया। इसी तरह सरकार की राजकोषीय देयताएं भी 2011-12 के 28.228 करोड़ के स्तर से बढ़कर 2015-16 में 41 हज़ार 197 करोड़ से पार हो गई। प्रदेश की प्रति व्यक्ति ऋण 2011-12 के 40 हज़ार 904 रूपये से बढ़कर 2015-16 में 57 हज़ार 642 रूपये हो गया था। अकेले 2017-18 वित्त वर्ष में अब तक प्रदेश सरकार लगभग 3200 करोड़ रूपये ऋण के रूप में ले चुकी है। एक अनुमान के अनुसार प्रदेश सरकार ने पिछले पांच वर्षों में औसतन 3500 करोड़ रूपये

प्रति वर्ष की दर से ऋण लिया था, जो हिमाचल जैसे छोटे राज्य के लिए घातक स्थिति से कम नहीं है। वर्तमान में प्रदेश का प्रत्येक व्यक्ति लगभग 55 हज़ार से अधिक ऋण के कर्ज में डूबा है।

इस वित्त वर्ष के आरंभ में विधान सभा पटल पर रखी गयी कैग रिपोर्ट ने भी सरकार को आर्थिक मुद्दों पर चेताया था। इस रिपोर्ट के अनुसार पूर्व प्रदेश सरकार द्वारा लिए जाने वाले नए कर्ज का प्रयोग केवल पुराने कर्जों पर ब्याज चुकाने के लिए ही किया गया। इस रिपोर्ट के आंकड़ों के आधाार पर नए ऋण का लगभग 76 प्रतिशत भाग केवल पुराने ऋण पर लगे ब्याज के भुगतान पर खर्च किया गया जो 2011-12 के स्तर से दोगुने से भी अधिक है। रिपार्ट के अनुसार सरकार ने बहुत से ऋण बाजार से बिना केंद्र सरकार की मंजूरी से तथा अपनी कर्ज लेने की सीमा से अधिक मात्रा में लिया है। इसी रिपोर्ट में इस बात का खुलासा भी किया गया है कि प्रदेश सरकार अधिक ब्याज दर पर नया कर्ज लेकर पुराने कर्ज का भुगतान कर रही है जो प्रदेश सरकार को कर्ज के जाल की तरफ धकेल रहा है।

ऋण के निपटारे संबधी बजट के आंकड़ों पर नज़र डालें तों हम पाते हैं कि प्रदेश सरकार द्वारा प्रति वर्ष मूलधन लौटाने से अधिक व्यय ब्याज की रकम चुकाने पर खर्च किया गया जो कि चिन्ता को और अधिक बढ़ाने वाला है। वर्ष 2017-18 के बजट अनुमान के अनुसार प्रदेश सरकार द्वारा खर्च किये गए सौ रूपये में से वेतन पर 16.84, पेंशन पर 13.83 , ब्याज अदायगी पर 9.78, ऋण अदायगी पर 9.93 प्रतिशत जबकि विकासात्मक कार्यों के लिए केवल 39.55 प्रतिशत ही शेष रहे हैं। बजट में प्रस्तावित 100 रूपये के व्यय को पूरा करने के लिए सरकार की राजस्व प्राप्तियां 77.45 रूपये है । शेष 22.55 रूपये को सरकार ने ऋण से पूरा किया। इस खराब वित्तीय प्रबंधन के लिए अपने व्यय पर लगाम लगाने की असमर्थता तथा राजस्व के स्रोत खोजने में नाकामी प्रमुख कारण है। इसे पूर्व राज्य सरकार की नाकामी ही कहेंगे कि एक ओर जहां नई योजनाओं को लाया गया, वहीं पुरानी योजनाओं के अन्तर्गत प्रदान किये जाने वाले प्रावधानों तथा लाभों में वृद्धि की गई तथा रियायत प्रदान करने के नए-नए तरीके खोजे गए वहीं इन गतिविधियों के कारण होने वाले व्यय को पूरा करने के लिए किसी तरह का आय का स्रोत नहीं खोजा गया। प्रदेश सरकार द्वारा अपने चहेतों को प्रसन्न करने के लिए भारी संख्या में बोर्डों तथा निगमों में अध्यक्षों व उपाध्यक्षों के रूप में नियुक्तियां दी गईं जिस कारण एक बड़ा भाग उनके वेतन-भत्तों व सुविधाओं पर खर्च हो गया। इसे खराब वित्तीय प्रबंधन ही कहा जा सकता है कि सरकार द्वारा पिछले पांच वर्षों में अनेक ऐसी लोक-लुभावन योजनाएं लाई गई हैं जिन्होंने प्रदेश के खज़ाने पर बोझ ही बढ़ाया है जबकि इस बोझ को कम करने के लिए आवश्यक राजस्व वृद्धि की दिशा में न तो सरकार और न ही प्रदेश के वित्त प्रबंधकों की तरफ से कोई भी कारगर कदम उठाए गए। वित्तीय क्षेत्र की इस विफलता को यदि समय रहते दूर नहीं किया गया तो प्रदेश शीघ्र ही बद से बदतर स्थिति में होगा। इसलिए नई सरकार से उम्मीद की जानी चाहिए कि वह पिछले पांच वर्ष में हुए खराब वित्तीय प्रबंधन में शीघ्र सुधार करे ताकि विकासात्मक उपलब्धियों के साथ-साथ वित्तीय प्रबंधन में भी प्रदेश का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाए।❖ **लेखक वाणिज्य शास्त्र के प्रवक्ता हैं।**

स्वदेशी जागरण मंच की हिमाचल को सिक्किम की तर्ज पर जैविक प्रदेश घोषित करवाने की मांग

- डॉ. अश्वनी महाजन

स्वदेशी जागरण मंच के सह संयोजक विख्यात अर्थशास्त्री डॉ. अश्वनी महाजन ने आज विश्व विख्यात शक्तिपीठ ज्वालामुखी मंदिर में पूजा अर्चना के बाद पत्रकारों से रूबरू होते हुए कहा कि स्वदेशी जागरण मंच पिछले 26 सालों से भूमंडलीकरण, जन विरोधी आर्थिक नीतियों, मल्टी नेशनल कंपनियों व बड़े कार्पोरेट जगत का विरोध करता चला आ रहा है। मंच का मानना है कि देश का विकास विदेशी पूंजी, संसाधनों से नहीं स्वदेशी प्रतिभा, संसाधनों व युवाओं से हो सकता है। देश में विभिन्न विचारधाराओं की सरकारें आती रही हैं और स्वदेशी जागरण मंच इस प्रकार की जन व देश विरोधी नीतियों का विरोध करता रहा है। वर्तमान सरकार के भूमि अधिग्रहण अध्यादेश, जीएम फसलों को अनुमति और एफडीआई नीति का मंच निरंतर विरोध करता चला आ रहा है। वर्ष 2017 को चीन विरोधी वर्ष घोषित करते हुए पूरे देश में चीनी विरोधी नीति को अपनाकर चीनी माल का बहिष्कार किया। कई आंदोलन छेड़े। 26 नवंबर 2017 को चंडीगढ़ में हिमाचल प्रांत के परिषद की बैठक अखिल भारतीय स्वदेशी जागरण मंच के संयोजक अरूण ओझा के मार्गदर्शन में हुई जिसमें निर्णय लिया गया कि स्वदेशी जागरण मंच के कार्यकर्ता सिक्किम की तर्ज पर हिमाचल प्रदेश को पूर्णतः जैविक प्रदेश घोषित करवाने के लिए काम करेंगे।

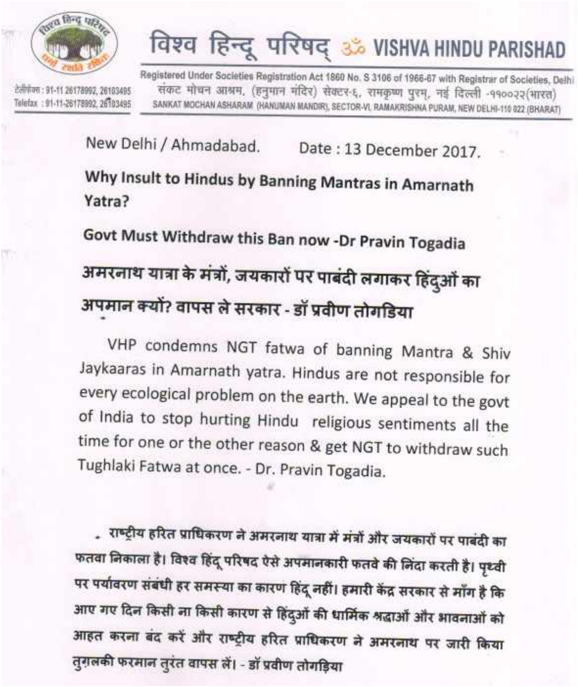

विश्व हिन्दू परिषद् ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi

टेलीफैक्स : 91-11 26178992, 26103495
Telefax : 91-11-26178992, 26103495

संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली -११००२२(भारत)
SANKAT MOCHAN ASHARAM (HANUMAN MANDIR), SECTOR-VI, RAMAKRISHNA PURAM, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

New Delhi / Ahmadabad. Date : 13 December 2017.

Why Insult to Hindus by Banning Mantras in Amarnath Yatra?

Govt Must Withdraw this Ban now -Dr Pravin Togadia

अमरनाथ यात्रा के मंत्रों, जयकारों पर पाबंदी लगाकर हिंदुओं का अपमान क्यों? वापस ले सरकार - डॉ प्रवीण तोगडिया

VHP condemns NGT fatwa of banning Mantra & Shiv Jaykaaras in Amarnath yatra. Hindus are not responsible for every ecological problem on the earth. We appeal to the govt of India to stop hurting Hindu religious sentiments all the time for one or the other reason & get NGT to withdraw such Tughlaki Fatwa at once. - Dr. Pravin Togadia.

राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने अमरनाथ यात्रा में मंत्रों और जयकारों पर पाबंदी का फतवा निकाला है। विश्व हिंदू परिषद ऐसे अपमानकारी फतवे की निंदा करती है। पृथ्वी पर पर्यावरण संबंधी हर समस्या का कारण हिंदू नहीं। हमारी केंद्र सरकार से माँग है कि आए गए दिन किसी ना किसी कारण से हिंदुओं की धार्मिक श्रद्धाओं और भावनाओं को आहत करना बंद करें और राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने अमरनाथ पर जारी किया तुग़लकी फरमान तुरंत वापस लें। - डॉ प्रवीण तोगड़िया

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644
Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi
Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190
Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

शोध पत्रिका इतिहास दिवाकर के पाठक मंच का सम्मेलन

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर में संस्थान द्वारा प्रकाशित इतिहास शोध त्रैमासिक पत्रिका ‘‘इतिहास दिवाकरष् के पाठक मंच का प्रथम सम्मेलन का आयोजित किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ इस शोध पत्रिका के पूर्व सम्पादक स्वर्गीय डॉ. विद्याचन्द ठाकुर जी को श्रद्धांजली से हुई। इस पाठक मंच सम्मेलन के दो तकनीकी सत्र रहे। प्रथम सत्र में इतिहास दिवाकर के व्यवस्थापक श्री प्यार चन्द परमार ने इस शोध पत्रिका की पृष्ठभूमि का उपस्थापन किया। तत्पश्चात् इसके नवनियुक्त सम्पादक डॉ. राकेश कुमार शर्मा ने शोध संस्थान में चलाए जा रहे शोध कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। इसका संचालन पत्रिका के सह–सम्पादक डॉ. विवेक शर्मा द्वारा किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. रमेश शर्मा ने शोध संस्थान तथा शोध पत्रिका की विकास योजनाओं का निर्देशन किया। द्वितीय सत्र में इतिहास दिवाकर के स्तरोन्नयन हेतु पाठक वर्ग द्वारा विविध सुझाव देते हुए इन सुझावों के अनुपालन का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का समापन करते हुए शोध संस्थान नेरी के मार्गदर्शक एवं समन्वयक श्री चेतराम गर्ग ने सभी सुधी पाठकों को इतिहास दिवाकर पत्रिका के प्रचार–प्रसार हेतु आत्मीय रूप से अपनाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में हिमाचल के विभिन्न भागों से विद्वान उपस्थित हुए। पाठक मंच सम्मेलन में डॉ. भाग चन्द चौहान, डॉ. मनोज शर्मा, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. सुनील ठाकुर, डॉ. संजीव कुमार बनियाल, डॉ. जे.पी. शर्मा, डॉ. रजनीश शर्मा, डॉ. सोहणू राम शर्मा, श्री प्रेम सिंह भरमौरिया, श्री नरेन्द्र कुमार नन्दा, श्री पवन चौधरी, श्री हरिकेश कुमार, श्री भूमिदत शर्मा, श्री ओम प्रकाश शुक्ला, संजय कुमार आदि लगभग 50 विद्वानों ने भाग लिया।❖ **प्यार चन्द परमार, शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि. प्र.)**

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,

DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

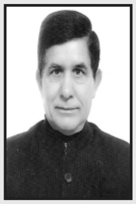

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

“सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः”

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास के लिए हिमाचल मॉडल का अवलोकन

विश्व पटल पर अपनी अलग पहचान बना चुका औद्योगिक क्षेत्र बीबीएन अब देश के उभरते औद्योगिक क्षेत्रों के लिए मॉडल इंडस्ट्रियल एरिया के तौर पर प्रस्तुत किया जाएगा। हिमाचल के इस औद्योगिक क्षेत्र का मॉडल का आधार जानने को मध्य प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री कार्यालय से आईएएस अधिकारी अखिल सक्सेना ने बीबीएन का विशेष दौरा किया और कई उद्योगों में जाकर कार्यप्रणाली देखी। लघु उद्यमियों से की विशेष मुलाकात-

हिमाचल के लोग ईमानदार व वातावरण शांत

औद्योगिक संगठनों के साथ बैठक के दौरान मध्य प्रदेश के आईएएस अधिकारी ने बीबीएन स्थित लघु उद्योग भारती कार्यालय बददी में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमियों से मुलाकात की। इस दौरान लघु उद्योग भारती के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष एन.पी कौशिक, प्रांत महामंत्री राजीव कंसल, बददी चैप्टर के प्रधान संजय बतरा, महामंत्री आलोक सिंह सहित अन्य उद्यमियों ने बीबीएन के परिप्रेक्ष्य में अपने विचार रखे। उद्यमियों ने बताया कि हिमाचल में वातावरण शांत है और लोग ईमानदार हैं तथा कानून व्यवस्था बहुत अच्छी है।❖

पचास हजार नौजवानों के कण्ठ से गूंजा 'वन्देमातरम्'

जयपुर का वातावरण गत 8 नवम्बर, के प्रात: काल उस समय देश भक्तिमय हो गया जब स्थानीय सवाई मानसिंह स्टेडियम में एक साथ 50 हजार लोगों ने एक सुर में राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' का गायन किया। सामूहिक गायन में ऐसा समां बंधा कि हर व्यक्ति में देशभक्ति का जोश उमड़ आया। स्कूल-कॉलेजों के छात्रों ने जब कार्यक्रम में तिरंगा लहराया तो सारा वातावरण राष्ट्रप्रेम के भाव से ओत-प्रोत हो गया। 'हिन्दू आध्यात्मिक सेवा फाउण्डेशन' तथा 'राजस्थान युवा बोर्ड' के संयुक्त तत्वावधान में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। समारोह में आये फिल्मी जगत की प्रसिद्ध संगीतकार जोड़ी कल्याण जी- आनन्द जी के वयोवृद्ध आनन्द जी के निर्देशन में करीब 300 कलाकारों ने मन-भावन देशभक्ति गीतों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के मुख्यातिथि केंद्रीय वाणिज्य मंत्री श्री सुरेश प्रभु थे। इस अवसर पर रा.स्व.संघ के अ.भा.सह सेवा प्रमुख श्री गुणवंत सिंह कोठारी भी उपस्थित थे। वंदेमातरम् के सामूहिक गायन में विशाल मंच पर 300 संगीतकारों ने ढोल, हारमोनियम, सितार, वायलिन, गिटार, तबला समेत 125 वाद्ययंत्रों के साथ देशभक्ति गीतों की प्रस्तुतियां देकर जयपुर में सुरों का इतिहास रचा।❖

हिन्दू महासंघ ने गौ संवर्धन व निर्धन कन्याओं के विवाह का संकल्प लिया

राष्ट्रीय हिंदू महासंघ ने हिमाचल प्रांत में भी अपना विस्तार कर दिया है। हिमाचल प्रदेश के हिंदू कार्यकर्ताओं की बैठक राष्ट्रीय हिंदू महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हनुमान गुर्जर व सदस्यता अभियान समिति के प्रभारी शिव लाल बावला की अध्यक्षता में हुआ। बैठक के दौरान हिंदू महासंघ के प्रदेशाध्यक्ष की कमान झाड़माजरी के युवा कार्यकर्ता निर्मल सिंह राजपूत को सौंपी गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उनको सामाजिक उत्थान में ज्यादा से ज्यादा योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गौ सेवा के संवर्धन व निर्धन कन्या की शादियों में हर संभव योगदान दें। कार्यभार संभालने के बाद प्रदेशाध्यक्ष निर्मल राजपूत ने कहा कि वह समाज के उत्थान में अपनी जान लगा देंगे और संगठन की हर नीति का पालन किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि जो जवान देश की रक्षा करते हुए शहीद हो जाते हैं उनके परिवारों की देखरेख करने वाला कोई नहीं होता जिस पर हम ऐसे जांबाज परिवारों की हरसंभव मदद करेंगे। राष्ट्रीय हिंदू महासंघ ने प्रदेश सरकार से यह भी मांग की कि जो वायदा कुछ सालों पहले हिमाचल की जनता से किया गया था कि हर जिला व हर पंचायत में गौशाला खुलवाई जाएगी जो कि आज तक पूरा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि सरकार वायदा पूरा करे या निजी गौशाला खोलने की अनुमति दे और उसे जमीन उपलब्ध कराए। हिमाचल इकाई का मुख्य सलाहकार कुलवीर सिंह को बनाया गया वहीं कांगडा जिला से सुनील कुमार जिला प्रधान चुने गए। युवा इकाई के अध्यक्ष राम शास्त्री कांगड़ा की जिम्मेदारी दी गई। गोविंद को बीबीएन एरिया के प्रधान पद का दायित्व सौंपा गया। समापन भाषण में प्रांतीय अध्यक्ष निर्मल ने कहा कि अगर हिमाचल प्रदेश के युवाओं और महिला शक्ति का सहयोग मिला तो गौशालाएं खुलवाने और गरीब परिवारों की मदद करने में वह कभी भी पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने कहा कि युवा इकाईयों व महिला मोर्चा दोनों का समय पर विस्तार किया जाएगा।❖

लैब जांच में मैगी के नमूने फेल, नेस्ले इंडिया पर 45 लाख जुर्माना

मैगी एक बार फिर विवाद में घिर गई है। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले के प्रशासन ने मैगी के लैब जांच में कथित तौर पर फेल हो जाने पर नैस्ले इंडिया और इसके वितरकों पर जुर्माना लगाया है। नेस्ले इंडिया ने कहा, 'यह त्रुटिपूर्ण मानकों के प्रयोग का मामला है।' जिला प्रशासन ने नेस्ले पर 45 लाख रूपए, जबकि इसके तीन वितरकों पर 15 लाख रूपये और इसके दो विक्रेताओं पर 11 लाख रूपए का जुर्माना लगाया। जिले के अधिकारियों के मुताबिक, प्रशासन ने पिछले साल नवंबर में नमूने इकट्ठा किए थे और उन्हें लैब जांच के लिए भेज दिया था। जांच में पाया गया कि मैगी के उन नमूनों में इंसान की खपत के लिए तय सीमा से अधिक राख थी। ❖

हिमाचल के और 200 विद्यालयों में होगी वोकेशनल विषयों की पढ़ाई

वोकेशनल विषय में पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए राहत भरी खबर है। राज्य के 200 सरकारी स्कूलों में वोकेशनल विषय शुरू किए जाएंगे। 9वीं से 12वीं कक्षाओं तक यह सब्जेक्ट पढ़ाए जाएंगे। फरवरी में शुरू होने वाले नए शैक्षणिक सत्र से इन्हें शुरू कर दिया जाएगा। मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) ने स्कूलों में वोकेशनल कोर्सेज शुरू करने को सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) के मिशन डायरेक्टर डॉ. बीएल बिंटा ने सरकारी स्कूलों के प्रिंसिपल से इन विषयों को शुरू करने के लिए प्रस्ताव मांगा है। आरएमएसए के अनुसार केंद्र से औपचारिकता पूरी होने के बाद इसकी प्रक्रिया को शुरू कर दिया गया है। आरएमएसए के मिशन डायरेक्टर की ओर से सभी स्कूल प्रिंसिपल को सर्कुलर जारी कर ये प्रस्ताव मांगा गया है। आरएमएसए के तहत मांगे गए प्रस्ताव में स्कूलों को इंफ्रास्ट्रक्चर बताना होगा।

यानि स्कूल के पास क्या वोकेशनल विषय शुरू करने के लिए क्लास रूम की व्यवस्था है। यदि वोकेशनल लैब बनाने की जरूरत पड़ती है तो स्कूल के पास इसे बनाने के लिए प्रर्याप्त जगह है। वोकेशनल विषयों को करने के बाद रोजगार के लिए भटकना नहीं पड़ता। हिमाचल के सरकारी स्कूलों में 9 वोकेशनल सब्जेक्ट शुरू किए गए हैं। इसका अलग से सर्टिफिकेट स्टूडेंटस को मिलता है। प्लस टू की पढ़ाई पूरी करने के बाद विभाग की ओर से कैंपस प्लेसमेंट भी करवाई जाती है। जो छात्र जॉब करना चाहते हैं उन्हें अच्छी जॉब मिल जाती है। काफी अच्छा रुझान इन सब्जेक्ट में अभी तक रहा है। इसीलिए शिक्षा विभाग स्कूलों की संख्या बढ़ा रहा है।

स्कूल के बाद शिक्षा विभाग ने अब कॉलेज में भी बी-वॉक डिग्री शुरू की है। जिसके बाद ज्यादा से ज्यादा संख्या में स्कूलों में वोकेशनल एजुकेशन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

नेशनल वोकेशनल एजुकेशनल क्वालिफीकेशन फ्रेमवर्क (एनवीक्यूएफ) के हिमाचल के 873 स्कूलों में वोकेशनल एजुकेशन चल रही है। इसमें 70 हजार छात्रों ने दाखिला लिया है। 9वीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक ये सब्जेक्ट शुरू किए गए हैं। इसके तहत स्टूडेंट को स्कूलों में ऑटोमोबाइल, रिटेल, सिक्योरिटी व आईटी, हेल्थ केयर, हॉर्टिकल्चर जैसे सब्जेक्ट शुरू किए गए है। इनमें काफी अच्छा, रिस्पॉन्स स्टूडेंट की ओर से मिल रहा है। छठे फेज में 200 और स्कूलों में इन विषयों को शुरू किया जा रहा है।❖

हिमाचल के कई महत्त्वपूर्ण पर्यटक स्थलों की बदलेगी तस्वीर

केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने स्वदेश दर्शन योजना के तहत हिमाचल में पर्यटक स्थल विकसित करने के लिए 100 करोड़ का बड़ा तोहफा दिया है। इससे प्रदेश के अनेक पर्यटक स्थलों की तस्वीर बदलेगी। हिमालय सर्किट के लिए पर्यटन केंद्र भी विकसित किए जाएंगे। इसके अलावा एडीवी प्रोजेक्ट के तहत भी प्रदेश के करोड़ों रूपए खर्च कर पर्यटक स्थलों को विकसित किया जा रहा है। प्रदेश पर्यटन विकास बोर्ड के प्रवक्ता ने बताया कि केंद्र सरकार ने दो दिन पूर्व ही हिमालयन सर्किट के तहत प्रदेश को पर्यटन विकास के लिए 100 करोड़ की राशि मंजूर की है जिसके तहत धर्मशाला, शिमला, कुल्लू-मनाली सहित विभिन्न पर्यटक स्थलों को संवारा जाएगा। धर्मशाला में डलझील, पालमपुर, के शहीद सौरभ कालिया वन विहार, बीड़-विलिंग में एयरो स्पोर्ट्स सेंटर, चंबा में भलेई माता।❖

लोहड़ी एवं मकर संक्रांति

मानव मन नित्य नूतनता और अनुकूलता की चाह रखता है। इसी चाह की पूर्ति के लिए उसने सहस्राब्दियों तक अथक परिश्रम से जीवन पद्धति निर्मित की जिसमें जीवन की नीरसता और एकरसता को दूर करने के लिए मेलों, उत्सवों और त्यौहारों का सृजन किया। उत्सव और त्यौहार मनुष्य जीवन को उल्लासमय बनाते हुए गति प्रदान करते हैं। अपने दैनन्दिन कार्यों की ऊब से कुछ समय के लिए हर्ष और आनंद के क्षण हमें उत्सवों के बहाने प्राप्त होते हैं। वर्ष भर अपनी दिनचर्या में व्यस्त मनुष्य उत्सवों और पर्वों के बहाने अपने सगे सम्बधियों से मिलकर जो संतोष और सुख का अनुभव करता है उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता।

भारत विश्व भर में प्राचीनतम देश है। कश्मीर से कन्याकुमारी और कामरूप से कच्छ तक यह पुण्य भारत भूमि धर्मप्राण और उत्सव धर्म धरती है। दुनिया भर के चिन्तनशील लोग भारत को विविध धर्मी और विविधता वाला देश कहते हैं किन्तु यह विविधता ही भारत की सबसे बड़ी सांस्कृतिक सम्पन्नता है। यहां के प्रत्येक प्रांत में बोली जाने वाली भिन्न-भिन्न भाषा-बोलियां, खान-पान, तीज-त्यौहार और पर्व तथा उत्सव इस देश की सनातनता के पोषक हैं। अलग-अलग प्रांतो के अपने-अपने उत्सव और त्यौहार हैं जैसे बंगाल की दुर्गा पूजा, महाराष्ट्र का गणेश उत्सव, देश के उत्तर पश्चिम में होली-दिवाली और उड़ीसा में भगवान जगन्नाथ यात्रा आदि अपना विशेष महत्व रखते हैं। इसी तरह उत्तर भारत सहित हिमाचल प्रदेश में लोहड़ी और मकर संक्रांति का त्यौहार विशष स्थान रखता है। देश के अन्य भागों में यह त्यौहार भिन्न-भिन्न नामों से मनाया जाता है। लोहड़ी का त्यौहार मकर संक्रांति की पूर्व संध्या अर्थात पौष मास के अन्तिम दिन रात्रि के समय मनाया जाता है। हालांकि मासान्त से आठ दिन पर्व से ही इस त्यौहार की शुरूआत लड़कों और लड़कियों कि अलग-अलग टोलियों द्वारा लोहड़ी गायन के रूप में हो जाती है। आठ-दस की टोलियों में बालक गांव भर के सभी घरों में रात के समय लोहड़ी गाने जाते है। प्रत्येक गृहस्वामी बच्चों में मूंगफली, रेवड़ियां, गजक आदि वितरित करते हैं। कुछ लोग बच्चों में पैसे भी बांटते हैं। हालांकि आज से तीस चालीस वर्ष पहले ग्रामीण क्षेत्रों में लोहड़ी गाने आए बच्चों को अनाज देते थे। लोहड़ी वाले दिन रात्रि के समय घरों में भांति-भांति के पकवान बनते हैं। सभी बाल-वृद्ध रात्रि के समय आग के अलाव (घयाने) की पूजा करते हुए उसमें तिल,चावल और गुड़ की आहुतियां देते हैं और अलाव के चारों ओर बैठ कर भजन-कीर्तन करते हैं और बड़े बुजुर्ग कोई न कोई ऐतिहासिक/धार्मिक प्रसंग या आख्यान सुनाते हैं। सभी लोग बड़े चाव से सुनते और रात भर जागरण भी करतें हैं। यह त्यौहार हिमाचल के निचले क्षेत्रों-मण्डी, बिलासपुर, हमीरपुर, कांगड़ा, ऊना तथा चम्बा आदि में विशेष रूप से मनाया जाता है।

मकर संक्रांति को माघ मास की शुरूआत होने से इसे माघी साजी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं। प्रकृति में ऊष्णता का संचार भी होने लगता है। दिनों का आकार भी बढ़ना शुरू होने लगता है। इस दिन प्रायः सभी घरों में घी और खिचड़ी का पकवान बड़े चाव से खाया जाता है। इस दिन नदियों और पवित्र सरोवरों में स्नान का बड़ा महत्व है। लोग प्रातःकाल उठकर सबसे पहले स्नान, ध्यान, पूजा-पाठ करके सामर्थ्य अनुसार दान भी करते हैं। मण्डी जिला के करसोग में तत्तापानी तथा कुल्लू के मणीकर्ण में लोग बड़ी संख्या में स्नान करने पहुंचते हैं। ❖

तपोदीप्त मुखमण्डल-स्वामी विवेकानंद

बंगाल प्रांत के विभिन्न स्थानों से भी अनेक लोग स्वामी विवेकानंद के श्रीचरणों के दर्शन की इच्छा से बेल्लूर मठ में उपस्थित होते थे। वे किसी को धर्म सम्बंधी समस्या की मीमांसा कर देते थे, किसी भाग्यवान को शिष्य बनाकर कृतार्थ कर देते थे। मानव में आत्मा की सुप्त महिमा को जगाने के लिए महापुरुष मानो सदा ही तैयार रहते थे। पात्रापात्र का विचार नहीं, धनी-दीन का भेद नहीं; पण्डित-मूर्ख सभी उनके पास एक सा आदर व सम्मान पाते थे। स्वामी जी कभी प्रश्नकर्ता की कठिन दार्शनिक समस्या की मीमांसा कर रहे थे, तो कभी भारत की आर्थिक व लौकिक उन्नति किस प्रकार सम्भव हो सकेगी, इसकी विवेचना कर रहे थे। एक दिन 'हितवादी' सम्पादक श्रद्धेय पण्डित सखाराम गणेश देऊस्कर अपने मित्रों के साथ स्वामीजी के दर्शन करने आये। वार्तालाप के सिलसिले में पण्डितजी के मित्रों में एक को पंजाबी जानकर स्वामीजी उनके साथ पंजाब प्रान्त की आवश्यकताओं के बारे में चर्चा करने लगे। भारतीय जनसाधारण के दैन्य, दुःख, अशिक्षा तथा सामाजिक जीवन की दुर्दशा को दूर करने के लिए न्याय की दृष्टि से प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति के ऊपर उत्तरदायित्व है- और इस उद्देश्य से प्राणपण चेष्टा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है- इत्यादि राष्ट्रीय जीवन की समस्याओं के प्रधान विषयों का वर्णन स्वामीजी ओजस्वी भाषा में करने लगे। काफी देर तक वार्तालाप के बाद पण्डितजी ने विदा ली।

इसी समय उनके साथी पंजाबी मित्र ने स्वामीजी को लक्ष्य करके कहा, ''स्वामीजी, आपसे धर्मोपदेश सुनने के लिए हम बड़ी आशा करके आये थे, परन्तु दुर्भाग्य से अतिसाधारण विषयों की चर्चा हुई-आज का दिन व्यर्थ गया।''स्वामीजी का तपोदीप्त मुखमण्डल व्यथित करुणा से गम्भीर हो उठा। वे धीर भाव से बोले, ''सज्जन, जब तक मेरी जन्मभूमि का एक कुत्ता भी भूखा रहेगा, तब तक उसे आहार देना ही मेरा धर्म है। इसके अतिरिक्त और जो भी कुछ है- अधर्म है।''

एक दिन जन्मगत अधिकारिकवाद की चर्चा के सिलसिले में स्वामीजी ने इस प्रकार के युक्तिविहीन मतवाद की तीव्र आलोचना करके यह बता दिया कि किस प्रकार उसके द्वारा वर्तमान समाज की दुर्गति हुई है। वैज्ञानिक व्याख्या द्वारा विषमता व भेदवादपूर्ण बुरे आचार के समर्थन की सम्पूर्ण विरोध करते हुए उन्होंने कहा- ''नहीं, सड़े-गले मुर्दो को फूलों से न ढको अति निन्दनीय कापुरूषता से ही समझौता करने की प्रवृति उत्पन्न होती है। साहस का अवलम्बन करो। मेरे प्यारे पुत्रों! सब से बढ़कर तुम साहसी बनो। किसी भी कारण से असत्य के साथ समझौता करने न जाना। चरम सत्य का प्रचार करो। इस से मत डरो कि तुम्हें लोकसमाज की श्रद्धा प्राप्त न होगी अथवा तुमसे अवांच्छनीय झगड़े का कारण उत्पन्न होगा। सत्य को न छिपाते हुए यदि तुम सर्वान्त:करण से सत्य की सेवा करो तो तुम्हें एक परम ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होगी। इस शक्ति के सम्मुख लोग उस बात को तुम्हारे सामने कहने में काँप उठेंगे जिसकी सत्यता पर तुम्हारा विश्वास न हो। चौदह वर्ष तक काया-मन-वाक्य से सत्य की सेवा करने पर लोग तुम्हारी बात पर विश्वास करेंगे। केवल इसी उपाय से तुम जनसाधारण का कल्याण कर सकते हो, उन्हें बन्धन से मुक्त कर सकते हो तथा समग्र राष्ट्र को उन्नत बना सकते हो।❖

भ्रष्टाचार के चलते चीन ने लगाई पाकिस्तान के तीन रोड़ प्रोजेक्ट पर रोक

चीन सरकार ने चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) के तहत बन रहे तीन बड़े सड़क प्रोजेक्ट के लिए मिलने वाले फंड को रोक दिया है। सीपीईसी के तहत बनने वाले इन प्रोजेक्टों में भ्रष्टाचार के आरोप लगने के बाद चीन ने यह कदम उठाया है। चीन के इस फैसले से पाकिस्तान नेशनल हाइवे अथॉरिटी (एनएच) के अरबों डॉलर की सड़क परियोजनाओं को करारा झटका लगेगा। अब चीन सरकार इस मामले में आगे फैसला लेगी और नई गाइडलाइंस जारी करेगी, जिसके बाद ही इन परियोजनाओं को फंडिंग जारी की जा सकेगी। चीन इस मामले में भविष्य में क्या फैसला लेता है, इसका पता तो बाद में ही चलेगा, लेकिन इतना तो तय है कि फिलहाल पाकिस्तान की सड़क परियोजनाएं ठप हो जाएंगी। वन बेल्ट वन रोड परियोजना के तहत बनने वाला चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा पीओके से गुजरता है। इस परियोजना के जरिए चीन का शिनजियांग इलाका पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत से जुड़ेगा। भारत चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का लंबे समय से विरोध कर रहा है। भारत का कहना है कि पीओके भारत का अभिन्न हिस्सा है, जिस पर पाकिस्तान ने अवैध कब्जा कर रखा है। भारत ने कहा कि चीन की ओर से पीओके में सीपीईसी का निर्माण करना उसकी संप्रभुता का उल्लंघन है। इसी के चलते भारत ने चीन में आयोजित ओबीओआर समिट का भी बहिष्कार किया था। ❖

ब्रिटिश प्रधान मंत्री की हत्या की साजिश नाकाम, दबोचे गए आतंकी

ब्रिटेन ने एक बड़ी आतंकी साजिश को विफल कर दिया है। आतंकियों ने आत्मघाती हमले के जरिये प्रधानमंत्री टेरेसा मे की हत्या की साजिश रची थी। इस मामले में दो युवकों को गिरफ्तार किया गया है। ब्रिटेन में इस साल एक के बाद एक कई आतंकी हमले हुए हैं। इससे पुलिस और खुफिया एजेंसियां सतर्क हैं। स्काई न्यूज ने पुलिस के हवाले में बताया कि आतंकियों ने प्रधानमंत्री के सरकारी आवास 10 डाउनिंग स्ट्रीट को बम से उड़ाने और इसके बाद टेरेसा मे की हत्या की साजिश की थी। ब्रिटेन की सुरक्षा एजेंसी एम. आइ. के महानिदेशक ने कैबिनेट मंत्रियों को इस साजिश की जानकारी दी। लंदन पुलिस ने बताया कि साजिश में शामिल दोनों आतंकियों को लंदन और बर्मिंघम में छापेमारी के दौरान दबोचा गया। इनकी पहचान उत्तरी लंदन के 20 वर्षीय नईमुर रहमान और बर्मिंघम के 21 साल के मुहम्मद आकिब इमरान के रूप में हुई है। सुरक्षा अधिकारियों के अनुसार इस साल मार्च से विफल की गई यह नौवीं आतंकी साजिश है। दोनों आतंकियों को बुधवार को वेस्टमिंस्टर मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेश किया गया। अभियोजन मार्क कैरोल ने कोर्ट को बताया कि रहमान ने डाउनिंग स्ट्रीट के गेट को धमाके से उड़ाकर दफ्तर में घुसने की योजना बनाई थी। उसने आत्मघाती धमाके, मिर्च की स्प्रे करने और चाकू से हमला करने की भी साजिश रची थी। ❖

ट्रम्प द्वारा मुस्लिम देशों पर ट्रैवल बैन -सुप्रीम कोर्ट ने दी अनुमति

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने छह मुस्लिम देशों पर लगाए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के ट्रैवल बैन के आदेश को पूरी तरह से लागू करने की अनुमति दे दी है। सुप्रीम कोर्ट के 9 में से 7 जजों ने अन्य अदालतों द्वारा ट्रैवल बैन आदेश पर लगाई रोक को हटाने का फैसला किया और कहा कि इसे तुरंत लागू किया जा सकता है। जजों ने अपने फैसले के कोई उचित कारण नहीं दिए। जजों ने कहा कि हवाई के फेडरल कोर्ट को अपने रोक के आदेश की समीक्षा करने की जरूरत है। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट में अमेरिकी सॉलिसिटर जनरल नोएल फ्रैंसिस्को ने विभिन्न जांच एजेंसियों के कागजात रखते हुए ट्रैवल बैन के पक्ष में दलील दी। ट्रैवल बैन का विरोध कर रहे हवाई स्टेट और सिविल लिबर्टीज यूनियन ने अलग-अलग याचिकाएं लगाई थीं। राष्ट्रपति ट्रम्प ने अपने तीसरे ट्रैवल बैन में ईरान, लीबिया, सीरिया, यमन, सोमालिया और चाड के नागरिकों के अमेरिका आने पर प्रतिबंध लगाया था। हवाई सरकार ने इसे कोर्ट में चुनौती दी, जिस पर निचली कोर्ट ने ट्रैवल बैन पर रोक लगा दी थी। ❖

बेटी के जन्म के बाद पढ़ाई से लेकर शादी तक का खर्च गांव वाले उठाएंगे

राजस्थान के राजसमंद जिले की पिपलांत्री पंचायत वैसे तो अपनी पहचान के लिए मोहताज नहीं है। लेकिन इस गांव के नाम के साथ अब एक और अनूठी उपलब्धि जुड़ने जा रही है। अब इस गांव में पैदा होने वाली हर बेटी के जन्म से उसकी पढ़ाई से लेकर शादी तक का सारा खर्च गांव वहन करेगा। गांव के लोग जनसहयोग और सरकार की कुछ योजनाओं से बेटियों का भविष्य संवारेंगे। अभी इस गांव में बेटियों के जन्म पर 111 पेड़ लगाने की परंपरा है। साथ ही बेटी के जन्म पर 31 हजार की एफडी गांव वालों द्वारा कराई जाती है। साथ ही बच्ची के परिजनों से बाल विवाह नहीं कराने, बेटी को शिक्षा दिलाने का शपथ पत्र लिया जाता है। पिपलांत्री के पूर्व सरपंच श्याम सुंदर पालीवाल ने कहा, पौधे लगाने की यह परंपरा 11 साल पहले शुरू की थी। एक साल में पंचायत क्षेत्र में लगभग 60 बेटियों का जन्म होता है। योजना के शुरू होने के बाद साल 2017 तक 650 बच्चियों का जन्म हुआ है। सभी का सामूहिक विवाह करवाएंगे।

पिपलांत्री के गांववासी बताते हैं कि पहले इसी गांव में लोग बेटी को बोझ समझकर गर्भपात करवा देते थे। लेकिन बेटी बचाने की इस मुहिम के बाद लोगों की सोच बदली है। इस मुहिम का ही असर है कि इस पंचायत में बेटियों का लिंगानुपात 53 प्रतिशत है। गांव की कई बेटियां स्पोर्ट्स में राज्य स्तर पर खेल चुकी हैं। पंचायत की इस अनूठी मुहिम से गांव का नाम तो रोशन हुआ ही, साथ ही गांव वालों का सम्मान भी बढ़ा है। ❖

भारतीय मूल की 11 साल की बच्ची को मिला 'टॉप यंग साईंटिस्ट' का खिताब

भारतीय मूल की अमेरिका में रहने वाली 11 साल की गीतांजलि राव को यंगेस्ट साईंटिस्ट का अवार्ड दिया गया है। वो भी उनकी अनोखी खोज के लिए, जिसके कारण अब दुनिया भर के लोगों को फायदा मिलेगा। दरअसल गीतांजलि राव की सांइस में काफी दिलचस्पी है। उनकी इसी रूचि के कारण उन्हें केवल 11 साल की उम्र में अमेरिका के टॉप साईंटिस्ट के साथ 3 महीने बिताने का मौका मिला। हालांकि उनके साथ 9 और बच्चों को भी चुना गया था। लेकिन गीतांजलि राव ने इस मौके का बेहतरीन फायदा उठाया। और एक ऐसी इनवेनशन कर डाली जिसकी मदद से कुछ ही मिनटों में बिना किसी खर्च के पानी में लेड की जांच की जा सकती है। हजारों लोग जिससे खतरनाक बीमारियों का शिकार होने से बच सकते हैं। गीताजंलि के उपकरण का नाम कार्बन नैनोट्यूब्स है जिसका नाम ग्रीक देवी टेथीज के नाम पर रखा गया है। जिन्हें शुद्ध जल की देवी माना जाता है।

आपको बता दें पानी में लेड का पता लगाने के लिए बड़े-बड़े देश करोड़ों रुपये खर्च करते हैं। पानी के सैम्पलस को लैब में ले जाकर जांच करने में वक्त भी काफी लगता है लेकिन गीतांजलि राव की इनवेन्शन के कारण अब पानी में फोन की मदद से लेड का पता लगाना आसान हो गया है। साथ ही इस इनोवेशन को कहीं भी आसानी से ले जाया जा सकता है। पानी में मौजूद लेड पानी को बुरी तरह से प्रदूषित करता है। जिस पानी का इस्तेमाल करने से लोगों को स्किन, पेट, लीवर संबंधी खतरनाक बीमारियां होती हैं। गीतांजलि राव को इस इनवेन्शन के लिए 'टॉप यंग साईंटिस्ट अवार्ड' दिया गया है। साथ ही 25 हजार डॉलर यानि 16.22 लाख रुपये ईनाम में दिए गए हैं। गीतांजलि ने महज 11 साल की उम्र में ये खिताब पाया है जो काबिले तारीफ है। ❖

हरि बोल, हरि बोल, से हो रहा एक दूसरे का अभिवादन

चंबा। अरे भाई साहब और सुनों बहन जी, आप क्यों व्यर्थ की चिंता किये जा रहे हो, सभी खाली हाथ आए हैं और खाली हाथ ही इस धरा से लौटने वाले हैं। आज जिस वजह से आपकी जय-जय कार हो रही है न, यह जय-जय कार भी सदा के लिए नहीं रहने वाली। इसलिए सिर्फ आपको कर्मशील बन कर कर्म करते चलो, फल की इच्छा मत करो, के कथन पर अमल करना चाहिए। क्योंकि जो आज आपका है, कल किसी और का होने वाला है। स्पष्ट कहा जाए तो इस धरा पर कुछ भी स्थायी नहीं है। ऐसा ज्ञान भगवत गीता में मिलता है। जिसका प्रचार प्रसार इन दिनों खूब हो रहा है और इसका बीड़ा गोलोक एक्सप्रेस ने उठाया है। बांके बिहारी के भक्तिरस में डूबे चंबा जनपद के दो भाई नितिन और निखिल ने माहौल को इस कदर भक्तिमय बना दिया है कि अब जनपद के लोग एक दूसरे को दुआ सलाम करने के लिए गुड मार्निंग, गुड ऑफ्टर नून और गुड इवनिंग की बजाय हरि बोल, हरि बोल कहकर एक दूसरे का अभिवादन स्वीकार करते हैं। शुरूआत में गोलोक एक्सप्रेस से जुडने् वालों की तादाद कम थी। लेकिन, अब चंबा जनपद का औसतन हर ग्याहरवें घर में गोलोक एक्सप्रेस से जुड़ा सदस्य मौजूद है। गोलोक एक्सप्रेस से जुडने् वालों का मत है कि भगवान श्री कृष्ण के भक्तिरस का रसपान करने वालों को गोलोक एक्सप्रेस से जरूर जुडना् चाहिए। क्योंकि गोलोक एक्सप्रेस से जुडने् वाला हर नागरिक खुद को प्रसन्नचित महसूस कर रहा है। गोलोक एक्सप्रेस से जुडना् बेहद आसान है। पेशेवर वकील नितिन और उनके भाई निखिल से संपर्क साधकर गोलोक एक्सप्रेस से जुड्कर बांके बिहारी लाल भगवान श्री कृष्ण के भक्तिरस का रसपान किया जा सकता है।

गोलोक एक्सप्रेस से जुडने् वाले को बाकायदा भगवत गीता और रिकार्डिड भजन का एक बॉक्स दिया जाता है। इसके माध्यम से लोग अपने घर में भागवत गीता पढ़कर या फिर रिकार्डिड भजन के बाक्स के माध्यम से श्री कृष्ण के भजन सुन सकते हैं। गोलोक एक्सप्रेस से जुड़े लोग समय-समय पर सत्संग भी करते हैं। जिसमें हरि नाम का सिमरन किया जाता है। गोलोक एक्सप्रेस के जरिये चंबा जनपद के माहौल को भक्तिरस से सराबोर करने और बांके बिहारी लाल के भक्तिरस का रसपान करवाने के लिए भाई नितिन और निखिल का समाजसेवी संस्था सेवा हिमालय, समाज सुधारक सभा और सेवा भारती ने आभार प्रकट किया है। ❖ सोमी प्रकाश भुव्वेटा

अंबेडकर जयंती तक डिजिटल पेमेंट पर हर दिन इनाम

अब अंबेडकर जयंती तक हर दिन डिजिटल पेमेंट्स पर इनाम मिलेगा। सरकार ने देश में नकदी से लेनदेन कम करने तथा डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए दो अनूठी योजनाएं- लकी ग्राहक योजना और डिजिधन व्यापार योजना शुरू करने का एलान किया है। इन योजनाओं के तहत यूपीआइ, यूएसएसडी, आधार नंबर आधारित पेमेंट सिस्टम और रूपे कार्ड से ट्रांजैक्शन करने पर लकी ग्राहकों को एक करोड़ रूपये और व्यापारियों को 50 लाख रूपये तक इनाम मिलेगा। हालांकि, यह सुविधा प्राइवेट क्रेडिट कार्ड और मोबाइल वॉलेट से ट्रांजैक्शन करने पर उपलब्ध नहीं होगी। नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने बृहस्पति वार को कहा कि इसकी शुरूआत क्रिसमस के दिन यानी 25 दिसंबर से हो रही है। यह 14 अप्रैल यानी अंबेडकर जयंती तक चलेगी। ड्रॉ निकालने के लिए दोनों योजनाओं के तहत 8 नवंबर से 13 अप्रैल के दौरान होने वाले डिजिटल पेमेंट्स को शामिल किया जाएगा। अंबेडकर जयंती यानी 14 अप्रैल को मेगा ड्रॉ निकाला जाएगा जिसमें लकी ग्राहक को एक करोड़ तथा डिजिधन व्यापारी को 50 लाख रूपये तक मिलेगा। कांत ने बताया कि लकी ड्रॉ के विजेताओं को यह राशि उनके बैंक खाते में कैशबैक के रूप में दी जाएगी।❖

साल में 3 बार आम की फसल देने वाली पौध तैयार की किशन सुमन ने

यह आम बेहद खास है। एक साल में 3 बार फल देता है। देश-विदेश में इसे इतना पसंद किया जा रहा है कि ऑर्डर पूरे नहीं हो पा रहे हैं। दिल्ली में एक प्रदर्शनी के दौरान पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी तो आम की इस किस्म से इतना प्रभावित हुए कि चार पौधे राष्ट्रपति भवन के मुगल गार्डन में लगवा दिए। अब इस आम की इटली, अमेरिका व सऊदी अरब से डिमांड आ रही है। सदाबहार आम की इस किस्म के जनक हैं कोटा जिले के गिरधरपुरा के 50 वर्षीय काश्तकार श्रीकिशन सुमन। वे बताते हैं कि मेरे पास आज इतनी डिमांड है कि मैं ऑर्डर पूरे करने लायक पौधे तैयार नहीं कर पा रहा हूं। वे बताते हैं कि इस सदाबहार आम में दूसरी किस्मों की तुलना में मिठास ज्यादा होती है। इसमें रेशे भी कम होते हैं। फल का बाहरी रंग ऑरेंज होता है और गूदा केसरिया रंग का होता है। इसमें फल गुच्छों में लगते हैं, जबकि दूसरी किस्मों में ऐसा नहीं होता है। परंपरागत खेती करने वाले श्रीकिशन के परिवार को प्राकृतिक आपदा से नुकसान हो रहा था। तभी विचार आया कि ऐसी खेती क्यों नहीं हो सकती, जिसमें प्राकृतिक आपदा का संकट ही नहीं रहे। इसके बाद देसी गुलाब की ग्राफ्टिंग की तो एक ही पौधे पर कई तरह के गुलाब आने लगे। फूलों के बाद फलों में आम याद आया। अलग-अलग किस्म की 100 से ज्यादा गुठलियां बोई, पौधे बने, उनमें से विभिन्न किस्म के पौधे छांटे और मिक्स वैरायटी का आम तैयार किया। इस पौधे पर सर्दी, गर्मी व बारिश में फल आने लगे। बस, यहीं से उन्होंने इस पर नए प्रयोग करने शुरू कर दिए।

अभी उनके पास 322 मदर प्लांट हैं। हर पौधे की शाखा से वह ग्राफ्टिंग करके शिशु पौधे तैयार कर रहे हैं। यूपी के सहारनपुर से 20 हजार देसी आम के पौधे मंगवा रखे हैं। एक पौधा 3 माह में ग्राफ्टिंग से तैयार हो पाता है। श्रीकिशन ने बताया कि सितंबर में इटली के लोगों की डिमांड पर जयपुर के कृष्णकांत 10 पौधे इटली ले गए। अमेरिका और सऊदी अरब से भी इन पौधों की मांग की गई है।❖

लकड़ी दान करने की परम्परा को पुनर्जीवित कर रहे हैं सुनील

कन्यादान, रक्तदान व अंगदान सहित अन्य दानों में धर्म लकड़ी का दान भी शुमार है। यह वह दान है जो अंतिम संस्कार के दौरान किया जाता है। बिलासपुर में यह दान सुनील शर्मा कर रहे हैं। उन्होंने पहल करते हुए खुद दस क्विंटल लकड़ी खरीदकर एक स्थान पर जमा की और लोगों से आग्रह किया कि वे अगर घर से एक-एक लकड़ी भी लेकर आएं तो कई क्विंटल लकड़ियां एकत्र हो जाएंगी और सभी के काम आएंगी चाहे वह गरीब हो या अमीर। किसी भी गरीब परिवार में अगर मृत्यु हो जाए, तो सबसे पहला काम लकड़ी एकत्र करने का होता है।

गरीब परिवार इतना सक्षम नहीं होता कि वह लकड़ी खरीदकर दाह संस्कार का प्रबंध करे और आजकल लोगों में इतना कर्म भाव नहीं रह गया है कि वे उनकी मदद कर सकें। सुनील का मानना है कि एक-एक लकड़ी जमा करेंगे तो अनावश्यक कटने से बच सकेंगे पेड़।

गांवों में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो लोग एकदम आरा लेकर जंगल की ओर निकल पड़ते हैं और पेड़ को काट डालते हैं। शव दाह के बाद भी बहुत सारी लकड़ी बच जाती है, उसे या तो चोर उठाकर ले जाते हैं या फिर जो उसे काटने आए थे वह अपने काम में लगा लेते हैं।

सनातन परंपरा रही है कि जब गांव में किसी की मृत्यु हो जाती है तो सभी गांव वाले अपने-अपने घर से एक-एक लकड़ी लेकर श्मशानघाट तक जाते हैं और श्मशानघाट पर इतनी लकड़ी एकत्र हो जाती है कि उससे कई दाह संस्कार किए जा सकते हैं। परंपरा यह भी है कि दस दिन तक उस व्यक्ति के घर पर गांव वाले बारी-बारी रात को रहते हैं, ताकि उसका दुख बंटा सकें।❖ साभार: दैनिक जागरण

आखिर क्यों ?

गहनों में हीरा, मन से कोमल होती हैं, बेटियाँ
घर का श्रृंगार, आँगन की बहार होती हैं बेटियाँ
हर रिश्ते का आधार, होती हैं बेटियाँ
रिश्तों में चार चाँद लगाती हैं। बेटियाँ
फिर भी अपनों द्वारा क्यों छली जाती हैं बेटियाँ
अपनों द्वारा ही बलि चढ़ जाती हैं बेटियाँ।
असंभव को संभव बनाती हैं बेटियाँ
हर काम के लिए डट जाती हैं बेटियाँ
आँधी जैसी तेज़, समुद्र सी शांत होती हैं बेटियाँ
सृष्टि की सृजनहार होती हैं। बेटियाँ
फिर भी कोख में क्यों मारी जाती हैं बेटियाँ
अपनों द्वारा ही बलि चढ़ जाती हैं बेटियाँ।
घर- परिवार, देश का नेतृत्व करती हैं, बेटियाँ
रज़िया सी शासक, झाँसी सी बहादुर होती हैं बेटियाँ
सक्षम -सुलभ, कल्पना, सोनाक्षी सी
बुलन्द हौसलों वाली होती हैं बेटियाँ
देश का परचम, विश्व में फहराती हैं बेटियाँ
तभी तो दुर्गा माँ का रूप, कहलाती हैं बेटियाँ
फिर भी आबरू क्यों नही बचा पाती हैं बेटियाँ
अपनों द्वारा ही बलि चढ़ जाती हैं बेटियाँ।

सुषमा देवी, काँगड़ा

लोहड़ी

बालाओं द्वारा गायी जाने वाली:-

लोह्ड़ी आई भाबी, लोह्ड़ी आई।
क्या ओ क्या लियाई भाबी?
क्या ओ क्या लियाई?
गुनिया आटा, भाबी गुनिया आटा।
भाई म्हारा बाटा भाबी,
भाई म्हारा बाटा।।
दे माईं लोह्ड़ी, दे माईं लोह्ड़ी।
जीये तेरी जोड़ी, माई जीये तेरी जोड़ी।।

बालकों द्वारा गाई जाने वाली:-

दन्तरिया दन्तारा, दन्तारसा,
गाए गांव सारा, दन्तारसा।।
फोजिया बुम्बल काला, दन्तारसा।
लोह्ड़ी गाणे आला दन्तारसा।।
झोली चारों पठ्ठे, दन्तारसा।
सौण म्हीने रखे, दन्तारसा।।
सौण म्हारा भाई, दन्तारसा।
भाईयें लाई गड़गड़ाई दन्तारसा।।
भावो चढ़ के आई, दन्तारसा।
भावो कुच्छड़ गीगा, दन्तारसा।।
सेह म्हारा भतीजा, दन्तारसा।

मेजर रामनाथ शर्मा, हमीरपुर

शहीदी

शहीदी
मौत के जबड़े को तोड़
निकलती है बाहर
जो है एक वचन
मातृभूमि के लिए
रक्षा सांचे में ढला है जो
सर पर बांधे कफ़न
वह सजग जवान
जो समझता है भली-भांति
मुल्क के लिए
मर मिटने का सौभाग्य
हृदय गति रुकावट पर भी
खांसता वह वीर ऐसा
सिंह हुंकार सा
जो हौंसला पस्त करती
दुश्मन का
भाग खड़ा होता जो
समझ ललकार इसे
अंत समय का यही तो है
अंदरूनी पराक्रम
जिसकी छाप रहती है सदा
शहीदी पर

भीम सिंह परदेशी
सुन्दरनगर

पहाड़ी हल्दी की गुणवत्ता

हिमाचल प्रदेश के गांवों में प्रत्येक घर में कमोवेश हल्दी पैदा होती है। लोग अपने गुजारे के लिए हल्दी तैयार करते हैं मगर हल्दी की मांग में उछाल आया है। राजधानी दिल्ली से हल्दी के खरीददार शिमला आ रहे हैं।

शहर के साथ लगते बनूटी, नैहरा, दुधालटी, पंचायतों में जाकर किसानों से हल्दी खरीदने की बात कर रहे हैं। जिंदल कंपनी के लोगों ने पांच सौ रूपये प्रति किलो के हिसाब से हल्दी खरीदने की पेशकश की है। राज्य के ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़ दिया जाए तो शेष सभी जगह पर हल्दी पैदा होती है। हमीरपुर जिला के तहत भोरंज, बिलासपुर के घुमारवीं ब्लॉक में पैदा होने वाली हल्दी जालंधर, अमृतसर पहुंचती है। लेकिन सेब के बाद प्रदेश में हल्दी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अब कृषि विभाग ने भी योजना तैयार की है।

विभागीय अधिकारियों के मुताबिक राज्य के जनजातीय दो जिलों के अतिरिक्त चंबा के ऊपरी क्षेत्रों को छोड़कर सभी स्थानों पर हल्दी उत्पादन संभव है। लेकिन अभी तक प्रदेश में देसी किस्म की हल्दी पैदा की जा रही है। हल्दी के चमत्कारिक प्रभावों को देखते हुए लोग पांच सौ रूपये प्रति किलों के हिसाब से हल्दी खरीदने को तैयार हैं। वैसे आमतौर पर हल्दी दो सौ रूपये किलो बिकती है। ❖

जैविक खेती से स्वास्थ्य एवं समृद्धि

पर्यावरण व स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती लाभकारी है देसी खाद के प्रयोग से बेहतर उत्पादन मिलता है। वर्तमान में हम जो सब्जियां व अन्य खाद्य पदार्थ रोजाना इस्तेमाल करते हैं वे ही हमें बीमारी की ओर धकेल रहे हैं। लगातार हो रहे रसायनों के प्रयोग से खेतों के साथ-साथ पर्यावरण में भी जहर घुल रहा है और इसके परिणाम आने वाले समय में और घातक होंगे। इससे बचने का एकमात्र तरीका है जैविक खेती। जी हां। इस विधि से खेती करने में रसायनों का नहीं बल्कि गाय के गोबर, मूत्र व घर में बनने वाली खादों का ही प्रयोग होता है। बेशक उत्पादन थोड़ा कम होता है लेकिन इससे हमारे शरीर, पर्यावरण और जमीन को जरूरी तत्व मिल जाते हैं। प्रदेशभर में 40 हजार किसानों ने जैविक खेती के लिए विभाग के पास पंजीकरण करवाया है और 23,000 हेक्टेयर पर यह खेती हो रही है। जैविक खेती की खासियत यह है कि इस विधि से तैयार उत्पाद गुणवत्तापूर्ण होते हैं, क्योंकि इसमें गोमूत्र, गोबर व केंचुआ खाद का प्रयोग किया जाता है। इससे जमीन की उत्पादन क्षमता बढ़ती है और पर्यावरण को भी 60 फीसद कम नुकसान होता है। विशेषज्ञों की मानें तो जैविक खेती स्वास्थ्य के साथ-साथ पर्यावरण की भी रक्षक है।

जैविक खेती के लाभ

- जैविक खेती रसायनमुक्त होती है। जैविक खेती से खेत की उत्पादन क्षमता बढ़ाने वाले जीवाणु तैयार होते हैं जबकि नुकसान पहुंचाने वाले पनप नहीं पाते हैं।
- इस विधि से तैयार फसल से हमें पोषक तत्व भरपूर मात्रा में मिलते हैं।

जैविक खेती के लिए किसानों को प्रेरित किया जा रहा है वर्तमान में 40 हजार के करीब किसानों ने पंजीकरण करवाया है। इसके लाभ भी किसानों को बताए जा रहे हैं। तथा सरकार भी पूरा सहयोग दे रही है।

रासायनिक खेती के नुकसान

- रासायनिक खेती यानी अंग्रेजी खादों का सबसे अधिक नुकसान जमीन की उत्पादन क्षमता पर पड़ता है और यह दिन-ब-दिन कम होती जाती है।
- जमीन में फसल के लिए जरूरी जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। नतीजा फसल केवल इन खादों के सहारे रहती है।❖

शीत ऋतु में स्वास्थ्य की रक्षा कैसे करें

उत्तम स्वास्थ्य की दृष्टि से हितकर व उपयोगी समय शीतकाल का होता है। सर्दी के मौसम में रोग-प्रतिरोधात्मक शक्तियों का विकास किया जाता है। शीत ऋतु में जठराग्नि अत्याधिक प्रबल रहती है। अतः इस समय लिया गया पौष्टिक और बलवर्धक आहार वर्षभर शरीर को तेज, बल और पुष्टि प्रदान करता है। इस ऋतु में व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य-वर्द्धन के लिए किस प्रकार का आहार-विहार करना चाहिए, शरीर की रक्षा कैसे करनी चाहिए? यह समझना जरूरी है।

- पौष्टिकता से भरपूर, गरिष्ठ और घी से बने पदार्थों का सेवन इस समय अच्छा रहता है।
- दूध, घी, मक्खन, गुड़, खजूर, तिल, खोपरा, सूखा मेवा, उड़दपाक, सौंठपाक तथा अन्य पौष्टिक पदार्थ इस ऋतु में सेवन योग्य माने जाते हैं।
- इस ऋतु में ताजा जल से स्नान करना चाहिए। बड़ी आयु के लोग गर्म पानी का प्रयाग करें। जिनके हाथ-पैर फट जाते हों वे हाथ या पैर धोने में गुनगुने पानी का प्रयोग करें तो हितकारी होगा।
- प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठना, प्रातः भ्रमण, योगासन, सूर्य नमस्कार, तेल मालिश, एवं प्रातः काल सूर्य की किरणों का सेवन इस ऋतु में लाभदायक रहता है।
- दशमूलारिष्ट, लोहासव, अ श्वगंधारिष्ट अथवा अ श्वगंधावलेह तथा च्यवनप्राश जैसी आयुर्वेदिक औषधियों का इस काल में सेवन करने से वर्षभर के लिए पर्याप्त शक्ति का संचय किया जा सकता है।

इस बदलती ऋतु में सर्दी खांसी, जुकाम या कभी बुखार की संभावना भी बनी रहती है, जिनसे बचने के उपाय निम्नलिखित हैं-

- भोजन के पश्चात् भुनी हुई आजवाइन में हल्दी-नमक मिला कर नित्य सेवन करने से सर्दी-खांसी मिट जाती है।
- आजवाइन को तवे पर गर्म करके उसका धुआं नाक से लेना चाहिए। गर्म आजवाइन की पोटली बनाकर उससे छाती की सिकाई करने पर आराम मिलता है। इस दौरान मिठाई, खटाई और चिकनाई युक्त चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए।
- चौथाई चम्मच पिसी सोंठ, आधा चम्मच दालचीनी तथा थोड़ा पुराना गुड़, इन तीनों को एक कटोरी में गरम करके मिला लें। खाली पेट रोजाना लेने से सर्दी मिटती है।
- सर्दी-जुकाम और खांसी के स्थाई मरीज को थोड़ी सोंठ, एक छोटी डली गुड़ और थोड़ा घी एक कटोरी में लेकर उतनी देर तक गरम करना चाहिए जब तक गुड़ पिघल न जाये। फिर सबको मिलाकर रोज सुबह खाली पेट गरम-गरम खा लें। भोजन में मीठी, खट्टी चिकनी और गरिष्ठ वस्तुएं न लें। इस प्रयोग से यह रोग मिट जायेगा।
- सर्दी के कारण होने वाले सिरदर्द, छाती के दर्द और बेचैनी में एक चम्मच सोंठ का चूर्ण शहद में मिलाकर रोज चाटने से लाभ होता है।
- भोजन में मूंग, बाजरा, मेथी और लहसुन का प्रयोग करें। इससे भी सर्दी मिटती है तथा ये स्वास्थ्यवर्द्धक भी हैं।
- आधा चम्मच सितोपलादि चूर्ण शहद के साथ दिन में दो बार लेने से पुरानी खांसी में भी आराम मिलता है।❖ साभार- ओन्ली माई हैल्थ।

उत्तर: 1. लंदन, 2. एक्सप्रैस रेलगाड़ियों के, 3. 12 मार्च को और उसी दिन गांधी जी ने दांडी यात्रा शुरू की थी, 4. मगधी, 5. नारमन प्रिचार्ड, 6. इसाक न्यूटन, 7. कपिलवस्तु में, 8. चावल, 9. बिन्दुसार के, 10. चंदेल।

शिलाई की प्रियंका नेगी का एशिया कप कबड्डी स्पर्धा में दमदार प्रदर्शन

बेटी बेटों से कम नहीं है। यह बात सिरमौर की बेटी प्रियंका नेगी ने साबित कर दी है। सिरमौर के शिलाई की रहने वाली अंतरराष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी प्रियंका ने एशियन महिला कबड्डी चैंपियनशिप में अपना दमदार प्रदर्शन कर टीम को जीत दिलाई। अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी प्रियंका नेगी मूलतः सिरमौर के शिलाई की रहने वाली हैं। प्रियंका नेगी ने पहले ही दावा किया था कि निश्चित तौर पर वह गोल्ड मेडल लेकर ही वापस लौटेंगी। शिलाई में भारतीय महिला कबड्डी टीम की जीत की खबर मिलते ही खुशी की लहर दौड़ गई। जिला सिरमौर के कई खिलाड़ी विभिन्न खेलों में देश में खासा नाम चमका रहे हैं।

प्रदेश की कविता ने भी दिया योगदान

मेजबान देश ईरान को हराकर भारत ने स्वर्ण पदक पर कब्जा कर दिया है। इस प्रतियोगिता में हिमाचली बेटियों में प्रियंका नेगी व कविता ने प्रतिभा का लोहा मनवाया। फाइनल मुकाबला भारत ने 42-220 अंकों के अंतर से जीता। हिमाचल प्रदेश कबड्डी फैडरेशन के सचिव रतन ठाकुर के मुताबिक प्रदेश की दोनों ही खिलाड़ियों ने फाइनल में जबरदस्त प्रदर्शन किया। खिलाड़ी प्रियंका नेगी ने रेडर व डिफेंडर के तौर पर बखूबी खेला, जबकि कविता मेन कवर में टीम का हिस्सा बनी। अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी प्रियंका नेगी मूलतः सिरमौर के शिलाई की रहने वाली है। जबकि दूसरी खिलाड़ी कविता कुल्लू जिला से संबंध रखती है।❖

भारतीय महिला क्रिकेट की ए टीम में ठियोग की तनुजा ठाकुर शामिल

ठियोग विकास खंड की कुठार पंचायत की 23 वर्षीय तनुजा ठाकुर के एक ऑलराउंडर के रूप में भारतीय महिला क्रिकेट की ए टीम में शामिल होने से पूरे ठियोग क्षेत्र में खुशी का माहौल है। खासकर कुठार गांव सहित पूरी पंचायत व प्रदर्शन में उसके सहपाठी तनुजा की सफलता से फूले नहीं समा रहे हैं।

तनुजा ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई हाई स्कूल कुठार और जमा दो तक की पढ़ाई वरिष्ठ माध्यमिक सकूल बलग से की है। एक किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाली तनुजा अपनी माता आशा देवी व पिता प्रताप कंवर की तीन संतानों में से एक है।

धर्मशाला क्रिकेट अकादमी भेजा: पिता ने हमेशा तनुजा के शौक का सम्मान करते हुए उसे क्रिकेट अकादमी धर्मशाला भेजा जहां ट्रायल में उसका चयन हो गया। तनुजा पहली बार हिमाचल की अंडर 19 टीम में नार्थ जोन खेली जिसमें अच्छा प्रदर्शन करने के बाद उसका चयन सीनियर टीम में हुआ। 2013 में नार्थ जोन से खेलते हुए तनुजा ने अच्छा ऑलराउंड प्रदर्शन किया। इससे प्रोत्साहित होकर तनुजा को राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी बैंगलोर में भेजा गया। यहां पर भी तनुजा के अच्छे प्रदर्शन को देखते हुए उसे बांग्लादेश के विरूद्ध भारतीय टीम में प्रतिनिधित्व मिला है। तनुजा की इस उपलब्धि के चलते कुठार गांव में खुशी का माहौल है।

इस क्षेत्र में वॉलीबाल व कबड्डी में लड़कियां खेलती हैं लेकिन क्रिकेट में तनुजा पहली लड़की है जो गांव का नाम ऊंचा कर रही है। उसके पिता प्रताप कंवर अपनी बेटी की सफलता पर प्रसन्न हैं और उनका सपना है कि एक दिन तनुजा देश की महिला क्रिकेट टीम में शामिल होकर अच्छे रिकॉर्ड बनाए। ❖

कोयला सोना बन सकता है पर तपने को तैयार रहें

पति के 60 रुपए के वेतन में से 15 रुपए वे सास-ससुर को भेज देती। 5 रुपए किराये में तो 20 रुपए कर्ज चुकाने में चले जाते, जो देवर की शादी के लिए लिया था। शेष 20 रुपए में तीन बेटे और तीन बेटियों वाला घर चलाना सविता बेन के लिए वाकई कठिन था। तब सविता बेन अपने परिजनों के पास गई, जो कोयला बेचते थे। लेकिन उन्होंने यह कहकर इनकार कर दिया कि वे पैसे से तो मदद कर सकते हैं लेकिन, उसे कोयला बेचते हुए नहीं देख सकते।

किन्तु वह अड़ गई। अहमदाबाद तब कपड़ा मिलों के लिए जाना जाता था। उन्होंने इन मिलों से आधे जले कोयले खरीदकर घर-घर जाकर बेचना शुरू किया। उनका दिन सुबह 4:30 बजे कंडक्टर पति व बच्चों के लिए नाश्ता बनाने से शुरू होता। फिर पूरा दिन वे कोयला बेचने में लगाती। रात को खाना बनाती और उसके बाद खादी ग्रामोद्योग के लिए चरखा चलाकर खादी तैयार करती। पांच साल में उन्होंने अपनी दुकान खोल ली। उन्होंने अपने बिजनेस का विस्तार कर सिरेमिक सैक्टर की छोटी फैक्ट्रियों तक कर लिया। अब उन्होंने रेलवे बोगियों में आने वाले कोयले का ठेका लेकर अधजले कोयले की जगह शुद्ध कोयला बेचना शुरू किया। इतने बड़े पैमाने पर कोयला बेचने के लिए ऑफिस चाहिए, तो उन्होंने पास के होटल से अनुबंध किया। अन्य डीलरों और सविता बेन में यह फर्क था कि वे हमेशा दूसरों की तुलना में कोयला सस्ता लेकिन, नकद बेचती थी।

बाजार में प्रति क्विंटल 100 रुपए का मुनाफा लिया जाता था। सविता बेन ने 50रुपए का मुनाफा बेहतर समझा। घरेलु मोर्चे पर तीनों पुत्र उनके बिजनेस में शामिल हो गए, जबकि तीनों बेटियां ग्रेजुएट हो गई। सबसे बड़े बेटे मुकेश की रुचि सिरेमिक उद्योग में जागी। सविता बेन को भी सिरेमिक फैक्ट्री का आइडिया पसंद आया और अपनी सिरेमिक फैक्ट्री खोलने का फैसला किया। अपनी दुकान की आमदनी की बचत उन्होंने छोटी-सी सिरेमिक फैक्ट्री में लगा दी। इस परिवार ने स्टर्लिंग्स सिरेमिक इंडस्ट्री स्थापित की, जो विभिन्न देशों को सिरेमिक उत्पाद निर्यात करती है। कंपनी ने 1996 में इटली से उन्नत मशीनें मंगवाई और बड़ी मात्रा में आउटसोर्सिंग का काम आने लगा। आज भी 72 वर्षीय सविता बेन का दिन एकदम सुबह शुरू होता है लेकिन, किचन में नहीं बल्कि बिजनेस प्लान पर चर्चा करते हुए वे ठीक 8 बजे शॉप फ्लोर पर पहुंच जाती हैं, जहां 200 वर्कर हाई क्वालिटी की सिरेमिक टाइल्स बनाते हैं और रात के आठ बजने पर ही वे फैक्ट्री से लौटती है।

अब परिवार तरक्की करके एक रूम के किराये के मकान से 10 बेडरूम वाले बंगले में पहुंच गया है और जो परिवार कोयला बेचने के लिए ठेले चलाता था वह आज ऑडी तथा मर्सीडिज चलाता है सविता बेन की भावी योजना में सोने का थोक आयात करके स्थानीय ज्वैलरी निर्माताओं के साथ व्यापार करने का है, जिसके लाइसेंस के लिए उन्होंने आवेदन दे दिया है। फंडा यह है कि यदि आप कोयले को सोने में बदलना चाहते हैं तो सारी बाधाएं दूर करने के लिए खुद को तपाने को तैयार रहें।❖

नासा ने बताया कि सूर्य से निकलती है ओंकार की ध्वनि

सूर्य से प्रकाश के अतिरिक्त ध्वनि भी प्रसारित होती है। यह आवाज इतनी मंद होती है कि पृथ्वी तक पहुंच ही नहीं पाती। पिछले दिनों अमरीका के अंतरिक्ष संस्थान 'नासा' ने सूर्य से प्रसारित होने वाली ध्वनि को पकड़ने का प्रयत्न किया। नासा के वैज्ञानिकों को उस समय घोर आश्चर्य हुआ जब उन्हें पता लगा कि सूर्य से लगातार ''ऊँ'' की ध्वनि निकल रही है। भारत में ओंकार को बीज-मंत्र और अनहद नाद माना जाता है। हजारों वर्षों से भारतीय साधक और वैज्ञानिक ''ऊँ'' की साधना करते आये हैं। सहस्त्रों वर्ष पहले उन्होंने सूर्य की ध्वनि को कैसे सुना होगा यह भी आश्चर्य का विषय है।

गौरवपूर्ण काल- वेदों से विदेशी आक्रमण तक वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति

पुरातत्व खोजों से ज्ञात होता है कि भारत के भू-भाग का मानव जाति के प्रारम्भ से ही गहरा सम्बन्ध था। पत्थरयुगीन मानव हिमालय के निम्न भाग में घूमता रहा। भारत के प्राचीनतम निवासी आर्य थे। आर्य किसी जाति का नाम नहीं है बल्कि वह गुणवाचक संज्ञा है। 'आर्य' का अर्थ है श्रेष्ठ, गुणी या सभ्य। 'आर्य' शब्द संस्कृत का शब्द है। किसी भी यूरोपियन भाषा का नहीं है। वैदिक साहित्य में यह शब्द बहुत बार आया है। ऋग्वेद में यह शब्द 31 बार तथा अथर्ववेद में 5 बार यह श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में प्रयुक्त हुआ है। प्रामाणिक प्राप्त तथ्यों, पुरातत्व साधनों तथा ऐतिहासिक ग्रन्थों से यह सिद्ध हो गया है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे, वे कहीं भारत के बाहर से नहीं आये और न ही आक्रमणकारी के रूप में भारत पर आक्रमण कर यहां के मूल निवासियों को खदेड़ा परन्तु, यह भी सही है कि संस्कृति, सभ्यता तथा नैतिक जीवन का विस्तार करने, समय-समय पर आर्य भारत से बाहर गए। वैदिक सभ्यता भारत की आध्यात्मिकता का आदि स्रोत तथा विश्व में कर्म सिद्धान्त की दाता है। भारत की सभ्यता विश्व के लोकतन्त्र का भी आदि स्रोत है। वेदों में चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का वर्णन है। चारों मूल वेदों के हिन्दी में अनुवादकर्त्ता प्रो. (डॉ) ओमप्रकाश के अनुसार वेदों को 'मानव जाति के आदिग्रन्थ, प्राचीनतम आर्य संस्कृति की प्राचीनतम ज्ञान राशि तथा विश्व के लिए सर्वकालिक मार्गदर्शक दीप-स्तम्भ' कहा है। इसमें मानव जीवन के आदर्शों, जीवन मूल्यों तथा जीवन प्रणाली का आदर्श प्रस्तुत किया। वैदिक संस्कृति में ग्राम, ग्राम-समुदाय तथा ग्राम पंचायतें होती थीं। खेतीबाड़ी तथा पशुपालन को महत्व दिया जाता था। परिवार मिलकर सामूहिक कार्य, यज्ञ तथा परस्पर विचार करते थे। इसमें से राष्ट्र-समिति भी बनी थी। भारत में विविधता में एकता का गुण इसी काल में प्रारम्भ हुआ। वर्णाश्रम व्यवस्था बनी तथा जीवन को सफल बनाने के लिए संस्कारों की व्यवस्था बनी। शिक्षा के लिए गुरूकुल प्रणाली थी तथा सभ्यता एवं संस्कृति की भाषा संस्कृत थी जो विश्व की जननी भाषा है। वैदिक सभ्यता में राजा से प्रजा तक सभी को कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया है न कि अधिकारों के प्रति। संयुक्त परिवार प्रणाली थी तथा समाज में महिलाओं का बड़ा सम्मान था। प्रारम्भ में प्रकृति-पूजा प्रचलित थी तथा जीवन में नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया जाता था। 'सादा जीवन उच्च विचार' यह सामान्य जीवन का आदर्श था। जीवन का लक्ष्य सतकर्म करते हुए मोक्ष प्राप्ति होना था। ❖

अयोध्या का चुनावी परिप्रेक्ष्य

राम मंदिर-बाबरी मस्जिद विवाद पर पांच दिससंबर से सर्वोच्च न्यायालय में रोजाना सुनवाई शुरू होनी थी, लेकिन शुरूआत के बावजूद उसे आठ फरवरी तक टालना पड़ा। आखिर क्यों? दस्तावेजों के अधूरेपन के कारण या अयोध्या विवाद के चुनावी परिप्रेक्ष्य के कारण नई तारीख तय करी दी गई? कांग्रेस सांसद, यूपीए सरकार में कानून मंत्री भी रहे, प्रवक्ता का धर्म भी निभाने वाले कपिल सिब्बल 2019 के आम चुनावों के बाद इस मामले की शुरूआत की दलील देते हैं और कांग्रेस उसे उनका निजी, पेशेवर मामला मानती है, तो हास्यास्पद लगता है। सिब्बल की दलील थी कि राम मंदिर भाजपा का एजेंडा है और 2014 के चुनावी घोषणा पत्र का भी हिस्सा रहा है, लिहाजा राम मंदिर पर सर्वोच्च अदालत की सुनवाई का असर 2019 के जनादेश पर भी पड़ सकता है। सिब्बल बार-बार न्यायिक पीठ से सवाल करते रहे कि अयोध्या विवाद की सुनवाई की इतनी जल्दी क्या है? यदि जल्दी है, तो हमें इसके कारण बताए जाएं।

यह देश की राजनीति को प्रभावित करने वाला मामला है। यह देश के सेकुलर ताने-बाने को भी प्रभावित करेगा। इस मामले को सात जजों का संविधान पीठ को भेजना चाहिए, क्योंकि यह बेहद महत्वपूर्ण मामला है। सिब्बल ने यह आशंका भी जताई कि अदालत की रोजाना कार्यवाही से देश का माहौल और सार्वजनिक व्यवस्था भी बिगड़ सकते हैं। उन्होंने 19,000 दस्तावेजों और उनके अधूरे अनुवाद का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने साथी वकीलों के संग कोर्ट की सुनवाई का बहिष्कार करने का प्रयास भी किया। इस तरह चुनावी परिप्रेक्ष्यों में अयोध्या विवाद की व्याख्या करते हुए सिब्बल ने कोशिश की कि सुनवाई जुलाई, 2019 के बाद ही शुरू हो। बेशक कपिल सिब्बल इस मामले में सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड की पैरवी कर रहे हैं। सुन्नी बोर्ड को चुनाव भी नहीं लड़ना है। यह भाजपा की वैकल्पिक राजनीतिक ताकत भी नहीं है, जिस तरह कांग्रेस और भाजपा के आपसी समीकरण हैं। सुन्नी वक्फ बोर्ड 1949 से जानता है कि राम मंदिर भाजपा -संघ के लिए आस्था का मुद्दा है। वे अयोध्या में विवादित ढांचे की जगह ही भव्य राम मंदिर बनाने की प्रतिबद्धता के मद्देनजर काफी आगे निकल चुके हैं। लिहाजा आज जो स्थापनाएं और दलीलें सिब्बल ने दी हैं, वे बेमानी हैं। बेशक वह कांग्रेस के ही सियासी खेल का दांव चल रहे हैं। हास्यास्पद यह भी है कि कांग्रेस के एक प्रवक्ता राजीव त्यागी कई बार सार्वजनिक बयान दे चुके हैं कि कांग्रेस राम मंदिर बनाने के पक्ष में है। कांग्रेस के भावी अध्यक्ष राहुल गांधी खासकर इस मुद्दे पर खामोश हैं, यूपीए सरकार के दौरान सुप्रीम कोर्ट में ही हलफनामा दिया गया था कि राम का कोई अस्तित्व ही नहीं है, वह एक काल्पनिक पात्र हैं और अब मीडिया प्रकोष्ठ के प्रमुख रणदीप सुरजेवाला कहते हैं कि सिब्बल की दलीलों से कांग्रेस का कोई लेना-देना नहीं है। इन विरोधाभासों में 2019 चुनाव वाली दलील भी फंस गई है।

उसे धार्मिक और ऐतिहासिक परिभाषाएं तय नहीं करनी हैं। अयोध्या विवाद ऐसा मुद्दा है, जो देश के सांप्रदायिक और सामाजिक सौहार्द को बहुत गहरे से प्रभावित करता है। माहौल अब सामान्य होना चाहिए। कांग्रेस का बयान है कि वह सर्वोच्च न्यायालय का फैसला मानेगी, लेकिन साफ तौर पर कहने में हिचक रही है कि अयोध्या में राम मंदिर बने या न बने। और दूसरी तरफ गुजरात में सिर्फ वोटों को बटोरने की खातिर मंदिर-दर-मंदिर चक्कर काटे जा रहे हैं। क्या खूबसूरत दोगलापन है? कमोबेश अदालत की सुनवाई से यह भ्रम तो दूर होगा। बहरहाल प्रधान यायाधीश जस्टिस दीपक मिश्रा ने आश्वस्त किया है कि आठ फरवरी से निरंतर सुनवाई होगी। उसे अब और स्थगित नहीं किया जाएगा।❖ साभार: दिव्य हिमाचल

सुनील ने उगाया सबसे अधिक उपज देने वाला टमाटर

उपमण्डल पांवटा साहिब के गिरिपार क्षेत्र के कांटी मशवा पंचायत में शिक्षक सुनील कुंवर ने कृषि के क्षेत्र में एक नई क्रांति लाई है। जहां एक ओर वह स्कूल में बच्चों को शिक्षा ग्रहण करवाते हैं वहीं वह क्षेत्र के किसानों को कृषि के क्षेत्र में जागरूक कर रहे हैं। शिक्षक सुनील कंवर ने देश का सबसे अधिक उपज देने वाला टमाटर अर्का रक्षक अपने खेतों में उगाकर नई क्रांति लाई है। पेशे से शिक्षक सुनील कंवर ने बताया कि उसने अपने खेतों में इस बार हिंदुस्तान का सबसे अधिक उपज देने वाला टमाटर अर्का रक्षक लगाया है। जिसमे एक पौधे से 19 किलो तक टमाटर निकालते हैं। उन्होंने बताया कि जिला सिरमौर के किसान अभी वैज्ञानिक खेती के बारे में जागरूक नहीं है और उन्होंने अपने खेतों में टमाटर अपनी कमाई के लिए नहीं लगाए बल्कि इसलिए लगाए हैं ताकि और किसान जागरूक हो सकें। साथ ही कहा कि गांव के किसान अभी भी परंपरागत पुरानी खेती करते हैं। टमाटर की खेती में भी पुराने हिमसोना, रेड गोल्ड, 816 आदि लगा रहे हैं जिनके पौधे की ऊंचाई 8 फुट तक जाती है जिसके कारण किसानों की मेहनत ज्यादा लगती है तथा इन किस्मों में बीमारी अधिक लगती है।

भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान बंगलुरू के वैज्ञानिको ने भारत में पहली बार हाइब्रिड टमाटर अर्का रक्षक को विकसित किया है जो लीफ कर्ल वायरल, बैक्टीरियल विल्ट और शुरूआती बिल्ट जैसी बीमारियों से लड़ने में पूरी तरह से सक्षम है। पौधे की ऊंचाई सिर्फ 3-4 फुट होती है जिसके कारण मेहनत बड़ी कम लगती है। फल साइज में 90-100 ग्राम और देखने में चौकोर होता है। गहरे लाल रंग के ये टमाटर जल्दी खराब नहीं होते हैं, इसलिए इन टमाटरों को अधिक दूरी तक ट्रांसपोर्ट के जरिए भेजने में आसानी होती है। अन्य सामान्य प्रजातियों के टमाटरों की उपज के बाद छह दिनों तक रखा जा सकता है। संकर प्रजाति के टमाटर दस दिनों तक जबकि अर्का रक्षक प्रजाति के टमाटर पन्द्रह से बीस दिनों तक आसानी से किसी अन्य प्रयास के रखे जा सकते हैं। सुनील कंवर ने बताया कि किसान भाई अधिक उपज वाले अर्का रक्षक टमाटर लगाकर अन्य टमाटर की किस्मों से 5 गुना अधिक उपज लेकर अच्छी खासी आमदनी कमा सकते हैं। सुनील सुबह शाम खेती करते हैं और दिन में स्कूल में बच्चों को शिक्षा ग्रहण करवाते हैं। इनका उद्‌देश्य क्षेत्र में किसानों को जागरूक करना है उनका कहना है कि हमारे क्षेत्र में किसान बहुत मेहनती है। लेकिन उनको यह जानकारी नहीं होती।❖ **साभार हिमाचल दस्तक**

आंध्र सरकार ने मंदिरों में नया साल मनाने पर लगाया प्रतिबंध

अमरावती-आंध्र प्रदेश सरकार ने राज्य के सभी मंदिरों में 1 जनवरी को नया साल मनाने पर पाबंदी लगा दी है। सरकार का कहना है कि यह भारतीय वैदिक संस्कृति का हिस्सा नहीं है।

राज्य सरकार के अन्तर्गत आने वाले हिंदू धर्म परिरक्षणा ट्रस्ट (एचडीपीटी) ने नया साल न मनाने के संदर्भ में सभी मंदिरों को आदेश जारी किया। इस आदेश में उसने धर्मस्व आयुक्त वाईवी अनुराधा के दिशानिर्देश का हवाला दिया है। एचडीपीटी सचिव सी विजय राघवाचार्युलु ने आदेश में कहा कि 1 जनवरी को एक-दूसरे को बधाई संदेश देना और उसे किसी उत्सव की तरह मनाना भारतीय वैदिक संस्कृति का हिस्सा नहीं है। तेलुगु नए साल यानी उगादी को मनाया जाना चाहिए जो कि सबसे अच्छी संस्कृति है। इसमें कहा गया है कि भारत की आजादी के 70 साल बाद भी हम ग्रेगेरियन कैलेंडर को मानते हैं जिसका आविष्कार ब्रिटिश ने किया था। भारतीय संस्कृति को नजरअंदाज करके हम पश्चिमी सभ्यता का पालन करते हैं और मंदिरों को सजाने में लाखों रूपये बर्बाद कर देते हैं।❖ **साभार-एजेंसी**

कहानी शिमला के रोथनी कैसल की, जहां जन्म हुआ कांग्रेस पार्टी का

गर्मियों में, मौसम की तपिश से निजात पाने के लिए अंग्रेजों द्वारा बसाया गया था हिमाचल का शिमला, जो उनकी ग्रीष्मकालीन राजधानी भी बना। ब्रिटिशकाल में न सिर्फ सरकार के उच्च अधिकारी, बल्कि इंग्लैंड से आए विशिष्ट अतिथि भी शिमला में रहते या ठहरते थे। इसी के चलते, शिमला की ब्रिटिशकालीन इमारतों और सड़कों से आधुनिक भारतीय इतिहास के कई किस्से जुड़े हुए हैं।

इन्हीं में से एक कहानी है 19वीं शताब्दी में बने रोथनी कैसल की, जिसे सबसे ज्यादा याद किया जाता है उसके भूतपूर्व मालिक ए.ओ.ह्यूम के चलते। जाखू स्थित रोथनी हाउस का निर्माण वर्ष 1838 में हुआ। पहले सचिव डॉ. कार्टे ने वर्ष 1843 में यहां शिमला बैंक कॉरपोरेशन का कार्य शुरू किया।

वर्ष 1851 में यहां से बैंक हटा दिया गया और बैंक के ही एक कर्मचारी आर्नल ने 1854 में इसे खरीद लिया। इसके बाद यहां आशियाना सजाया ए ओ ह्यूम ने, जिन्होंने आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की। ह्यूम ने ही वर्ष 1867 में इसका नाम रोथनी कासल कर दिया था। यहीं रहते हुए भारत सरकार के तत्कालीन सचिव ह्यूम के दिमाग में पार्टी गठित करने का विचार उपजा। कांग्रेस पार्टी की स्थापना के संबंध में कई महत्वपूर्ण बैठकों का आयोजन भी मौजूदा वक्त के पीटर हॉफ होटल में हुआ करता था।

भारत सरकार के सचिव रहते हुए ए ओ ह्यूम यहीं से वायसराय के साथ अलग-अलग मसलों पर बैठक करने के लिए रवाना होते थे। उस दौरान वायसरीगल लॉज भी मौजूदा वक्त के पीटर हॉफ होटल में हुआ करता था। वर्ष 1861 से 1884 तक वायसराय यहीं ठहरते थे और जाखू स्थित रोथनी कैसल से यहां का सफर नजदीकी के चलते और भी आसान होता था। बाद में, वर्ष 1888 से भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में वायसरीगल लॉज स्थानातंरित कर दिया गया। मगर वायसराय के कई विशिष्ट अतिथि ए ओ ह्यूम के साथ रोथनी हाउस में ही दिन बिताते थे। वर्ष 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ए.ओ. ह्यूम ने इसी निजी आवास में रहते हुए की और यहीं पर पार्टी की पहली बैठक भी हुई थी।

'शीशे वाली कोठी' नाम से जाना जाता है अब रोथनी कैसल-शिमला के जाखू स्थित पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के आशियाना हॉली लॉज से बस कुछ ही दूरी पर है रोथनी कैसल। मौजूदा समय में लोग इसे शीशे वाली कोठी के नाम से भी जानते हैं। इस एक मंजिला इमारत के निर्माण में शीशो का प्रयोग अधिक किया गया है साथ ही लकड़ी के इस्तेमाल ने भी इसे आकर्षक स्वरूप दिया है। ए.ओ.ह्यूम के बाद यह लाला छूनामल के वंशजों का निजी आवास रहा है।❖ **साभार: पंचायत टाइम्स**

क्या परमात्मा ऐसा भी हो सकता है जो अपनी मानव संतानों के लिए अलग-अलग ज्ञान भेजे?

- डा0 जगदीश गांधी

गीता, त्रिपिटक, बाईबिल, कुरान, गुरुग्रंथ साहिब, किताबें अकदस आदि सभी पवित्र पुस्तकों में दी गई शिक्षाओं को भेजने वाला परमात्मा न तो निराकार हम अज्ञानतावश यह समझते हैं कि गीता में दी गई शिक्षाएं केवल हिन्दू धर्म को मानने वालों के लिए, त्रिपिटक में दी गई शिक्षाएं केवल बौद्ध धर्म को मानने वालों के लिए, कुरान में दी गई शिक्षाएं केवल मुस्लिम धर्म को मानने वालों के लिए, गुरू ग्रंथ साहिब में दी गई शिक्षाएं केवल सिख धर्म को मानने वालों के लिए, बाईबिल में दी गई शिक्षाएं केवल ईसाई धर्म को मानने वालों के लिए तथा किताबे अकदस में दी गई शिक्षाऐं केवल बहाई धर्म को मानने वालों के लिए ही हैं।

सभी पवित्र पुस्तकों का ज्ञान परम पिता परमात्मा के दिव्य लोक से संसार की समस्त मानव जाति का मार्गदर्शन करने के लिए, समस्त मानव जाति की भलाई, सुख, समृद्धि, मानव मात्र की आपसी एकता, आपसी प्रेम एवं संसार में रहते हुए ही स्वर्ग की अनुभूति का मार्ग बताने के लिए आया हैं। इन सभी पवित्र ग्रंथों में सत्य, अहिंसा, दया, करूणा, न्याय, त्याग, मर्यादा, समता, भाईचारा, एकता, तन-मन की सफाई, चरित्र का बल आदि गुणों को अपनाने की बात कहीं गयी है। परमात्मा कभी भी अपनी संतानों के बीच में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं चाहता इसलिए उसकी सभी शिक्षायें किसी एक धर्म विशेष, जाति विशेष, भाषा विशेष एवं स्थान विशेष के लोगों के लिए न होकर सारी मानवजाति के लिए समान रूप से होती हैं।

सभी पवित्र पुस्तकों में दिया गया दिव्य ज्ञान परमात्मा ने युग-युग में मानवजाति की आवश्यकता के अनुसार संसार के विभिन्न स्थानों पर, स्थानीय भाषाओं में, उस युग के युगावतारों के माध्यम से भेजा है। कालान्तर में यही दिव्य ज्ञान संसार की विभिन्न भाषाओं में अनुवादित होकर सारे संसार में फैल गया। परमात्मा का कोई नाम नहीं हैं। विश्व के लोगों ने अपनी-अपनी भाषा में परमात्मा को ईश्वर, रब, खुदा, वाहे गुरू, गॉड आदि अनेक नामों से पुकारने के साथ ही उनकी पूजा, इबादत, प्रेयर, पाठ करने के लिए अलग-अलग तरह की पूजा पद्धतियाँ तथा अलग-अलग तरह के पूजा स्थल बना लिये हैं।

हमें शरीर के सभी अंग जैसे आंख, कान, वाणी, मस्तिष्क, हाथ, पैर आदि इसलिए मिले हैं कि हम अपने इन अंगों के सहयोग से पूरे उत्साह से परमात्मा का कार्य करें। हमारा शरीर एक यंत्र मात्र है। उदाहरण के लिए जब हम किसी शहर में घूमने जाते हैं तो घूमने के लिए वहाँ साईकिल या कोई अन्य वाहन किराये पर लेते हैं। इसी प्रकार परमात्मा ने संसार में प्रभु का कार्य करने के लिए यह शरीर रूपी साईकिल फ्री आर्फ चार्ज दी है। आत्मा इस शरीर रूपी साईकिल का सवार है। यह शरीर हमें ईश्वरीय आज्ञाओं के पालन के लिए मिला हुआ है। परमात्मा कहता है कि तेरा शरीर मेरे काम के लिए है और मेरा कार्य है सारी मानवजाति का कल्याण। अतः तू अपने इस शरीर का उपयोग सारी मानवजाति की भलाई के लिए करना।

यदि बालक को भौतिक तथा सामाजिक शिक्षा के साथ ही दिव्य लोक से परमात्मा द्वारा भेजी गई शिक्षाओं जैसे न्याय, सम्यक ज्ञान, करूणा, भाईचारा, त्याग तथा हृदय की एकता से जोड़ दें तो हमारे बच्चे टोटल क्वालिटी पर्सन (टी.क्यू.पी.) बन जाऐंगे। यदि हम अपने बालक का दृष्टिकोण धर्म के मामले में संकुचित बना दें तो किसी के जरा सा उकसाने पर वह जाति-धर्म के नाम पर आपस में एक-दूसरे से लड़ेगा, जबकि सारे विश्व की समस्त मानवजाति का परमात्मा एक ही है और सारी मानवजाति एक ही परमात्मा की संतानें हैं। युग-युग में आए सभी अवतारों के अंदर जो आत्म-तत्व था वह एक ही परमात्मा का था। अवतारों के शरीर छोड़ने के बाद उनकी आत्मा उसी एक परमात्मा में जाकर मिल गयी। इसी प्रकार हमारे अंदर एक परमात्मा की ही आत्मा है।❖ **लेखक शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल लखनऊ हैं।**

एक ग्रह ऐसा भी जहां दिन में तीन बार होता है सूर्योदय

बच्चों, क्या आपको पता है कि हमारी पृथ्वी से मात्र 340 प्रकाशवर्ष दूर एक ऐसा ग्रह भी है जिस पर तीन बार सूर्योदय और तीन बार सूर्यास्त होता है। यह ग्रह तारामंडल सेंटोरस में स्थित है जो करीब 1.6 करोड़ साल पुराना है। यह ग्रह आज तक खोजे सबसे नये ग्रहों में से एक है। इस ग्रह का द्रव्यमान पृथ्वी और बृहस्पति ग्रह से चार गुना अधिक है।

यह ग्रह तीन तारों की परिक्रमा करता है और हर दिन इस ग्रह पर तीन बार सूर्योदय और सूर्यास्त देखने को मिलते हैं। इस नए ग्रह को 'एचडी 131399एबी' नाम दिया गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार हालांकि यह ग्रह विशाल है लेकिन इसका द्रव्यमान ग्रहों की सीमा में ही है। यह ग्रह मुद्यद्धये तारे की परिक्रमा कर रहा है और अपने मातृ तारे से यह करीब 12 अरब किमी दूर है। इस ग्रह को अपने समय की परिक्रमा करने में पृथ्वी के मुकाबले 550 गुना ज्यादा समय लगता है यह ग्रह सूर्य से प्लूटो की तुलना में अपने मातृ तारे से दुगनी दूरी पर है लेकिन इसका तापमान 580 डिग्री सेल्सियस आंका गया है जो इसके कम उम्र का होने के कारण अधिक गर्म हैं यह नया ग्रह अब तक खोजे गए ग्रहों में सबसे कम उम्रवाला ग्रह है, इस ग्रह पर भी मिथेन और जलवाष्प की उपस्थिति भरा वातावरण है जो इस तरह के गैस महादानव ग्रहों पर सामान्य बात है।❖

दुनिया की सबसे लंबी रेल सुरंगें

स्विट्जरलैंड में दुनिया की सबसे लंबी रेलवे सुरंग गॉटहार्ड से ट्रेन की आवाजाही हाल में शुरू हो गई। यह सुरंग 57 किमी. लंबी और 2.3 किमी. गहरी है। स्विट्जरलैंड में स्थिति 57 किमी, लंबी गॉटहार्ड बेस टनल आम लोगों के लिए खोल दिया गया है। इस सबसे लंबी रेल टनल को बनाने में करीब 17 साल लगे।

दुनिया की कुछ लंबी रेलवे-सड़क सुरंग

1. गॉटहार्ड टनल, स्विट्जरलैंड, लंबाई 57 किमी
2. सीकान टनल, जापान लंबाई 53.9 किमी.
3. चैनल टनल, इंग्लिश चैनल में बनी, लंबाई 50.5 किमी.
4. युलहियोन टनल, दक्षिण कोरिया, 50.3 किमी.
5. लोत्वबर्ग बेस टनल, स्विट्जरलैंड, लंबाई 34.5 किमी.
6. न्यू गुआनजियाओ टनल, चीन, 32.645 किमी.
7. ग्वादररामा टनल, स्पेन, 28.4 किमी.

सपना हुआ पूरा

गॉटहार्ड बेस टनल बनाने की कल्पना 1947 में सबसे पहले स्विस इंजीनियर कार्ल एडवर्ड ग्रुनर ने की थी। लेकिन इसके बनाने की शुरूआत वर्ष 1999 से हो सकी।

तकनीक का जादू

गॉटहार्ड प्रोजेक्ट सुरंग आधुनिक तकनीक की वजह से संभव हो सका। इसकी मुख्य ड्रिलिंग मशीन 410 मीटर लंबी, यानी फुटबॉल के चार मैदानों से भी बड़ी थी।

क्या है खासियत...

8. गॉटहार्ड बेस टनल से प्रतिदिन 260 मालगाड़ियां और 65 पैसेंजर ट्रेनें गुजरेंगी। ट्रैक 200 किमी./घंटे की स्पीड से दौड़ सकेगी। यह आल्प्स पहाड़ के 2.3 किमी. नीचे बनी है।
8. पहाड़ के ऊपर का तापमान जीरो डिग्री व सुरंग के अंदर का तापमान 46 डिग्री रहता है। सुरंग के ट्रैक के स्लैब को बनाने के लिए 125 मजदूरों ने 43800 घंटों तक काम किया।
9. ज्यूरिख से नॉर्थ इटली के मिलान के बीच अब 2 घंटे चालीस मिनट का समय लगेगा। यह पहले के मुकाबले एक घंटे कम होगा।

भारत की सबसे लंबी रेल सुरंग

पीर पंजाल टनल देश की अब तक की सबसे लंबी रेलवे टनल है। यह करीब 11 किमी. लंबी है, जो जम्मू-कश्मीर में बनाई गई है। यह काजीकुंड से बनिहाल तक बनी है। मणिपुर, इंफाल में 11.5 किमी. की टनल बनाई जा रही है। वैसे, भारतीय रेलवे की ओर से प्रस्तावित ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन पर सबसे लंबी सुरंग बनने जा रही है। यह 15.1 किलोमीटर लंबी होगी। बताया जा रहा है कि यह देश की सबसे लंबी रेल सुरंग होगी। इसे सौद से जनासू के बीच बनाया जाएगा।❖

चुटकुले

1. पिता, ''बेटे! तुम स्कूल में क्या करते हो?''
   बेटा, ''डैडी! मैंने कभी आप से पूछा कि आप दफ्तर में क्या करते हैं?''
2. वकील ने अपराधी से कहा, ''यह साबित हो गया है कि यह हत्या तुम ने ही की है क्योंकि चाकू पर तुम्हारी उंगलियों के निशान पाए गए हैं।''
   अपराधी (घबरा कर), ''यह झूठ है चाकू पर मेरी उंगलियों के निशान हो ही नहीं सकते क्योंकि मैंने उस समय दस्ताने पहन रखे थे।''
3. प्रार्थी, ''मैं बहुत जिम्मेदार व्यक्ति हूं।''
   प्रबंधक, ''इसका कोई प्रमाण है?''
   प्रार्थी, ''जी हां, जहां मैं पहले काम करता था। वहां किसी भी काम के बिगड़ जाने पर मुझे ही जिम्मेदार ठहराया जाता था।''
4. सर्दियों में नहाने से बचने वाले पुत्र ने अपने पापा से पूछा, ''पापा आप कैसे नहाते हैं।''
   पापा ने बड़े सहज से उत्तर दिया, ''जैसे आप नहाते हैं।''
   सौरभ अपने पापा का उत्तर सुनकर बड़े आश्चर्य से बोला, ''तो क्या आप भी नहाते समय सोते हैं।''

प्रश्नोत्तरी

1. विदेश में सबसे बड़ा स्वामी नारायण जी का मंदिर किस देश में स्थित है?
2. कर्णावती, शहीद, वैशाली आदि नाम किनके हैं?
3. मॉरीशस में स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है और उस दिन का भारत में क्या महत्व है?
4. महात्मा बुद्ध के धर्मोपदेश किस भाषा में थे?
5. पहले एशियाई जिन्हें आलिम्पिक में स्वर्ण पदक मिला?
6. वह महान वैज्ञानिक जिनका जन्म क्रिसमस के दिन (25 दिसम्बर) को हुआ?
7. महात्मा बुद्ध का जन्म कहां हुआ था?
8. विश्व में आधे से ज्यादा लोगों के भोजन का आधार क्या है?
9. अशोक महान किसके पुत्र थे?
10. खजुराहो किस राजवंश की राजधानी थी?

मातृवन्दना

सदस्यता अभियान 2018-19

1-15 फरवरी 2018

बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

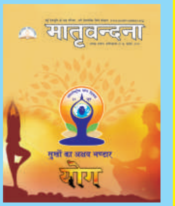

हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका	सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच
35 हज़ार परिवारों तक पहुंच	दो लाख से अधिक पाठक
नववर्ष का आकर्षक कैलेण्डर निःशुल्क	समाचार ही नहीं संस्कार भी

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

प्रबन्धक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990

email: matrivandanashimla@gmail.com

website: www.matrivandana.org

वार्षिक शुल्क

100 रुपए

आजीवन सदस्य (15 वर्ष)

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

सूचना

वर्ष 2018-19 में मातृवन्दना पत्रिका प्रकाशन के 25 वें वर्ष में रजत जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस हेतु मार्च 2018 का वर्ष प्रतिपदा विशेषांक 'हिमाचल गौरव' प्रकाशित करने की योजना बनी है। अतः लेखकों एवं कवियों से निवेदन है कि अपने लेख व कविताएं 15 फरवरी 2018 तक मातृवन्दना सम्पादकीय कार्यालय में हस्तलिखित या टाईप करवाकर डाक द्वारा या मेल पर निर्धारित तिथि तक अवश्य भेज दें।

सम्पादक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष: 0177-2836990 मो. 9805036545

email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org

मातृवन्दना पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करने हेतु सम्पर्क करें:

प्रबन्धक, मातृवन्दना

दूरभाष: 0177-2836990

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org

HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

देश दुनिया को प्रभावित करने वाली हिन्दुत्व से जुडी विश्व की एकमात्र और विश्वसनीय हिन्दी न्यूज वेबसाईट

www.Hindutva.info

कोई लागलपेट नहीं सिर्फ पूरा सच

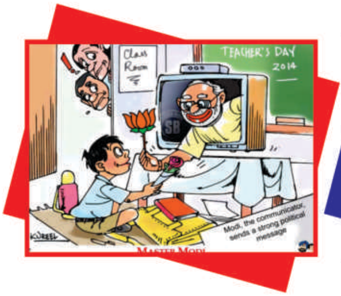

Share

- हिन्दूत्व के आधार को दर्शाती एकमात्र मल्टीमीडिया साईट जोकि है पूरे भारत में लोकप्रिय है।
- 1.5 करोड़ से भी ज्यादा फालोअरस।
- हिन्दू धर्म से जुडी पूरी जानकारी।
- राजनीति की तह तक जाने वाली सच्चाई पर आधारित खबरें व खुलासे।

Designed by : **New Era Graphics**, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।